thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 26 अक्तूबर 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 26 अक्तूबर 2014 से 01 नवम्बर 2014

का.शु. 3 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 131, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

महात्मा आनंद स्वामी के जन्मोत्सव पर डी.ए.वी राजगढ़ को मिला नया नाम

महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती का जन्मोत्सव 4 अक्तूबर 2014 को डी.ए.वी. स्कूल राजगढ के नए भवन में 'आनन्द पर्व' के रूप में बड़े धूम–धाम से मनाया गया। आनन्द पर्व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हि.प्र. तथा राष्ट्रीय आर्य–युवा समाज हिमाचल इकाई के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया। गौरतलब है कि महात्मा आनन्द स्वामी जी आर्य समाज के प्रचार व प्रसार हेतु सन् 1972 में राजगढ़ आए थे। राजगढ़ के नेहरू मैदान में आर्य समाज के जलसे में स्वामी जी के प्रवचनों को सुनने के लिए विशाल जनसमूह एकत्रित हुआ। महात्मा आनन्द स्वामी जी द्वारा 'आर्य' समाज मन्दिर राजगढ़' का शिलान्यास भी किया गया था। 4 अक्तूबर 2014 को महात्मा आनन्द स्वामी जी के जन्मोत्सव पर प्रधान श्री पूनम सूरी जी सम्पूर्ण परिवार सहित राजगढ़ पधारे। महात्मा आनन्द स्वामी के परिवार की तीन पीढ़ियों की उपस्थिति विशेष आकर्षण रही।

'आनन्द पर्व' का शुभारम्भ यज्ञ अनुष्ठान से हुआ। हवन में मुख्य यजमान के रूप में श्री पूनम सूरी व श्रीमती मणि सूरी जी के अतिरिक्त डी.ए.वी. एवं प्रादेशिक सभा के पदाधिकारियों, डी.ए.वी. के सदस्यों, पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड से आये प्राचार्यों ने यज्ञ में आहुतियाँ देकर डी.ए.वी. राजगढ के नव परिसर हेतु मंगल प्रार्थना की। यज्ञ ब्रह्मा डॉ. प्रमोद योगार्थी के अतिरिक्त स्वामी आत्मानन्द, स्वामी यज्ञेश्वरानन्द स्वामी जगदेश्वरानन्द व आचार्य नरेश ने आध्यात्मिक आशीर्वाद दिया। प्रधान श्री पूनम सूरी जी ने अपने कर कमलों से डी.ए.वी. राजगढ के नये विद्यालय का उद्घाटन किया। यज्ञ के उपरान्त एक विशाल पण्डाल में 1000 से ऊपर की संख्या में उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी जी ने विश्वास दिलाया कि यह विद्यालय अब कभी पीछे नहीं देखेगा और जल्द ही यहाँ +2 की कक्षाएँ आरम्भ कर दी जाएँगी। उन्होने ओ३म् की महिमा और 'ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव....' मन्त्र की व्याख्या करते हुए लोगों को इस मंत्र शक्ति से लाभान्वित होने का मार्ग बताया। आचार्य आर्य नरेश जी ने लोगों को डी.ए.वी. संस्थाएँ राष्ट्र को आदर्श नागरिक प्रदान करती है। उन्होंने विशाल जनसमूह को आस्तिक बनने के लिए भी प्रकृति से उदाहरण देकर अनेक सार्थक तर्क दिए। इस अवसर पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

महात्मा आनन्द स्वामी जी के राजगढ के प्रति प्रेम व लोगों की उनके प्रति श्रद्धा व सद्भावना को चलते इस विद्यालय का नाम डी.ए.वी. सैन्टेनरी पब्लिक स्कूल से बदल कर डी.ए.वी. सैंटेनरी महात्मा आनन्द स्वामी पब्लिक स्कूल कर दिया गया।

श्रीमती जे. काकड़िया जी ने विद्यालय को आनन्द स्वामी जी के नाम पर समर्पित किया जिसमें अपनी संगीतमय सहभागिता डी.ए.वी. न्यू शिमला के विद्यार्थियों ने निभाई। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्री मती रीना मल्होत्रा जी ने सभी का धन्यवाद करते बच्चों द्वारा प्रस्तुत कव्वाली रूप में प्रशस्ति गीत के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्त किया। 'आनन्द पर्व ' का समापन शान्ति पाठ, आर्य उद्घोष व ऋषि लंगर के साथ हुआ।

भारत समृद्धि के लिये पर्जन्य वृष्टी महायज्ञ संपन्न व वर्षा प्रारंभ

आर्यसमाज संभाजीनगर (औरंगाबाद) महाराष्ट्र में भारत समृद्धी के लिये पर्जन्यवृष्टि महायज्ञका आयोजन महर्षि दयानंद यज्ञ शाला में डॉ. नंदिताजी शास्त्री चर्तुवेदाचार्या पाणिनी कन्या महाविद्यालय के ब्रह्मत्व में तथा डॉ. कमलनारायणजी आर्य पौरोहित्य में तथा गुरुकुल ब्रह्मचारिणीयों के मंत्रपाठ सहित प्रारंभ हुआ। महानगरपालिका औरंगाबाद की महापौर सौ. कला ओझाजी ने ध्वजारोहण किया।

इस 5 दिनों में 108 यजमानोंने यजमान पद पर रहकर 111 (एक सौ ग्यारह) प्रकार की औषधियों तथा गाय के शुद्ध घी से यज्ञ किया अन्तिम उत्तरांचल विद्यापीठ के कुलगुरु मां. डॉ. महावीरजी अग्रवाल (हरिद्वार) तथा बहुसंख्या में उपस्थित संन्यासियों आर्य विद्वानों की उपस्थिती में पूर्णाहुति संपन्न हुई।

सभी मत संप्रदायों के आचार्यों तथा सामाजिक और राजनैतिक अग्र, पुरुषों द्वारा इस आयोजन की प्रशंसा की आर्य समाज सभाजी नगर से प्राप्त विज्ञाप्ति के अनुसार इस पर्जन्यवृटि यज्ञ से मराठवाड़ा में दूर–दूर तक वर्षा हुई।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 26 अक्तूबर, 2014 से 01 नवम्बर, 2014

प्रभु वर्षा की रिमझिम

● **डॉ. रामनाथ वेदालंकार**

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः, पवमानस्य शुष्मिणः।
चरन्ति विद्युतो दिवि।।

ऋग् ६.४१.३

ऋषिः **मेधातिथिः काण्वः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● **(शृण्वे)** सुन रहा हूँ, **(शुष्मिणः)** बलवान्, **(पवमानस्य)** पवित्रता–दायक सोम प्रभु का, **(वृष्टेः स्वनः इव)** वर्षा की रिमझिम जैसा, **(स्वनः)** नाद (हो रहा है)।, **(दिवि)** हृदयाकाश में, **(विद्युतः)** बिजलियाँ, **(चरन्ति)** चल रही हैं, चमक रही हैं।

● आज मेरे आत्म–लोक में बरसात छाई है। सोम प्रभु मेघ बनकर बरस रहे हैं। साधारण मेघ भी 'पवमान' होता है, क्योंकि वह पवित्रता–दायक निर्मल जल की वर्षा करता है; फिर मेरे सोम प्रभु 'पवमान' क्यों न हों। उनमें तो वह पवित्रता–दायक आनन्द रस भरा है, जो आत्मा और मन के युग–युग से संचित पाप को धो देता है। सोम प्रभु 'शुष्मी' हैं, बलवान् हैं, बलियों के बली हैं। अतः अपनी शरण में आनेवाले को आत्मिक बल से

परिपूर्ण कर देते हैं। उनसे बरसनेवाली बल की वृष्टि निर्बल को बली, असहाय को सुसहाय और उत्साह एवं जागृति से हीन को उत्साही एवं जागरूक बना देती है। आज मैं स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहा हूँ कि शुष्मी पवमान सोम प्रभु की आनन्दमयी रिमझिम वर्षा मेरे अन्तलोक में हो रही है। वर्षा की रिमझिम में जो संगीत होता है, वैसा ही संगीत मेरी आत्मा में उठ रहा है। उस दिव्य संगीत में मैं अपनी सुधबुध खो बैठा हूँ। बल और आनन्द की रिमझिम के साथ–साथ शीतल, मन्द, सुगन्ध प्राण–पवन बहकर मेरे मानस में नवीनता और स्फूर्ति उत्पन्न कर रहा है। वर्षा होने पर जैसे भूलोक पर सर्वत्र हरियाली छा जाती है, ऐसे ही मेरा अन्तर्लोक भी सत्य, न्याय, दया, श्रद्धा आदि सद्गुणों की हरियाली से हरा–भरा हो गया है। बरसात में जैसे नदियाँ पर्वतों से नीचे मैदानों में बहने लगती हैं, ऐसे ही मेरे आत्मा के उच्च शिखरों पर बरसे हुए सोम प्रभु के दिव्य रस की नदियाँ नीचे अवतरण कर मेरे मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियों आदि को आप्लावित कर रही हैं। बरसाती आकाश में जैसे बिजलियाँ चमकती हैं, वैसे ही मेरे हृदयाकाश में आज दिव्यता की विद्युतें चमकार कर रहीं हैं। वे विद्युतें मेरे मानस को प्रकाश का सूत्र पकड़ा रही हैं। उन क्षणप्रभा विद्युतों से मैं अपने मानस में स्थायी विद्युद्–धारा को अर्जित कर रहा हूँ, जो जीवन–पर्यन्त मुझे ज्योति देती रहेगी। मैं मुग्ध हूँ प्रभु–वर्षा की रिमझिम पर, मैं मुग्ध हूँ दिव्य विद्युतों की द्युति पर। हे सोम प्रभु! ऐसी कृपा करो कि यह बरसात मेरे आत्म–लोक में सदा उमड़ती रहे, सदा मुझे दिव्य बलदायी रस और प्रकाश प्रदान करती रहे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

दो रास्ते

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में एक बार फिर स्वामीजी ने 'विष्णु' शब्द की विशालता का अर्थ स्पष्ट किया और कहा कि हमें विशाल हृदय से काम लेना है और सब के भले में, सारे संसार के भले में अपना भला समझना है। वेद को आधार बनाकर उन्होंने कहा कि यह सारा संसार ईश्वर का विराट् रूप है। अपनी सूरीनाम की यात्रा का वर्णन करते हुए स्वामीजी ने 'शंख' का अर्थ बताया–अपनी बात को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाना, और फिर शंख के बाद विष्णु के 'चक्र' की बात कही और कहा कि जीवन में निरंतर काम करना ही श्रेष्ठ है स्वामी जी ने विष्णु बनने के लिए सच्चे ज्ञान का सारथि बनकर आगे बढ़ना, मन पर काबू रखना आवश्यक रहे ताकि इंन्द्रियां वश में रहें। लेकिन मन बहुत चंचल है, इसे वश में करने के लिए कठोनिषद् के आधार पर तरीका बताया। आगे कहा कि विष्णु को पाना है तो विष्णु की ऊँचाई तक पहुंचना होगा, सूर्य बनना होगा। सूर्य के गुण बताते हुए स्वामीजी ने कहा, सूर्य चमकता है, सूर्य स्थिर रहता है और सब जगह से पानी लेकर अपने पास नहीं रखता, वर्षा के रूप में वापस कर देता है। इंसान को भी विद्या, ज्ञान, योगाभ्यास और भक्ति से चमकना है। मानवता रूपी केन्द्र पर स्थिर रहना है। दौलत कमाकर लोगों में बांटनी है–उनमें जो, निर्धन, दुःखी और जरूरतमंद हैं। सूर्य से यह भी सीखना है कि जीवन में निराशा नहीं होना। कष्ट, क्लेश, रोग, निर्बलता, दुःख, इन्हें विश्वास के साथ सहन करना है। मुसीबत आयी है तो चली भी जाएगी।

अब आगे.....

इस बात को समझो, मेरे भाई! दुःख आता है तो जाता भी है। घबरा न जाओ, निराश न हो जाओ, मुक़ाबला करो! याद रखो, तुम अजर, अमर और सदा रहने वाला हो। यह दुःख, कष्ट, क्लेश और मुसीबतें सब अस्थायी हैं। तुम आत्मा हो और यह आत्मा–

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्
नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो,
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।
–कठो. १।२।१५

'यह आत्मा कभी पैदा नहीं होता, कभी मरता नहीं, यह स्वयं ही उपस्थित है। न यह किसी से बनाया गया, न कभी किसी से नष्ट होने–वाला है। यह पैदा होनेवाला नहीं, मरने वाला नहीं, यह सदा से है, सदा रहता है, यह पुराने से ज्यादा पुराना है, शरीर के समाप्त होने से यह समाप्त नहीं होता।'

फिर घबराहट किसलिए? निराशा किसलिए? सुनो! यह संसार ऊँच–नीच से भरा है। यहाँ ऊँचे पहाड़ भी हैं, टीले भी, ऊबड़–खाबड़ धरती भी, साफ–सीधे मैदानी रास्ते भी। जब जैसी हालत हो वैसे ही चलो। घबराओ नहीं, निराश न हो जाओ! यह ऊँच और नीच, यह सुख और दुःख, सब अस्थायी हैं। इनके होने पर भी अपने–आपको प्रसन्न रखो, अपने मन में विश्वास, अपने स्वामी पर विश्वास रखो–

काँटो से घिरा रहता है चारों तरफ से फूल।
फिर भी खिला ही रहता है क्या खुशमिजाज है!

तुम भी ऐसे ही रहो मेरे भाई, गुलाब के फूल की तरह, जो काँटों से घिरा हुआ भी खिला रहता है। याद रखो–

मुसीबत ऐन राहत है अगर हो आशिकी सादिक।
कोई परवाने से पूछे कि जलने में मजा क्या है।।

अरे भाई! अन्दर सच्ची लगन हो, प्रभु पर विश्वास हो, उसके लिए प्यार हो, तो दुःख भी सुख बन जाता है। जहाज़ जा रहा था समुद्र में, तभी तूफान आ गया। तेज हवा चलने लगी, भयानक लहरें उठने लगीं। हर लहर जहाज को धक्के देने लगी। यात्री घबराए, रोने लगे। जहाज़ के कप्तान ने कहा–" अरे घबराते क्यों हो? ये धक्के हमें उस मंजिल की ओर लिए जाते हैं जहाँ हमें जाना है। इन धक्कों और थपेड़ों के कारण हम समय से पहले ही अपने लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे।"

ऐ इन्सान, तू भी इस बात को समझ! ये दुःख, कष्ट, क्लेश, सबके–सब तेरे भले के लिए हैं, ये तुझे ज़्यादा तेजी से लक्ष्य की ओर ले जाएँगे। इनसे घबराओ नहीं, इनका स्वागत करो।

भगवान् कृष्ण मथुरा से द्वारका पहुँचे।

thearyasamaj.org

मथुरा के सभी लोगों को उन्होंने द्वारका में बसा दिया तो अपनी माँ देवकी के पास पहुँचे; बोले–"माँ ! अब बताओ तुम और क्या चाहती हो?"

माँ ने कहा–"ऐसी कृपा करो, कृष्ण, कि दुःख और आपत्तियाँ हमारे लिए बार–बार आएँ, क्योंकि जब दुःख आता है तब तुम्हारे दर्शन होते हैं।"

"सुख के माथे सिल पड़े"

सिल कहते हैं पत्थर को। देवकी माँ ने कहा–

सुख के माथे सिल पड़े जो प्रभु का नाम बिसराय।
बलिहारी उस दुःख के जो पल–पल नाम जपाय।।

यदि दुःख न होता मेरे भाई, तो ये दुनिया के लोग दौलत के नशे में शराब पीने लगते, भोग–विलास को अपने जीवन का लक्ष्य बना लेते, बुरा रहन–सहन शुरू कर देते। ऐसे लोग निर्धन रहें तभी अच्छा है। और फिर सूर्य एक और बात भी सिखाता है– यह कि गन्दगी हो, कीचड़ हो, खारी समुद्र हो–सबसे उसकी अच्छाई ले लो, बुराई को छोड़ दो; उसकी गन्दगी को दूर कर दो, स्वयं गन्दे नहीं बनो!

और तब सूर्य एक और बात भी करता है–जहाँ भी, जिस जगह भी बुरे कीटाणु हैं उन्हें नष्ट कर देता है। उनके साथ नरमी नहीं करता, रियायत नहीं करता, उन पर दया नहीं करता। ऐ इन्सान! तू भी ऐसा कर। जहाँ बुराई है, जहाँ विष है, जहाँ अत्याचार है, अन्याय है, उसे तबाह कर दे, जला के राख कर दे, उसके साथ नरमी न कर, रियायत न कर, उसे बाकी न रहने दे!

ऐसी कितनी ही बातें हैं सूर्य से सीखने की। उन सभी बातों का वर्णन तो यहाँ कर नहीं सकता, परन्तु इस बात से इनकार कौन कर सकता है कि सूर्य का हमारे देश की संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है? हम लोगों को दूसरे देशवालों ने सूर्य को नमस्कार करते हुए देखा तो कहा– "ये लोग सूर्य को ईश्वर मानते हैं।" वे समझ नहीं पाए कि आर्य लोग सूर्य को नमस्कार करते हैं तो इसकी पूजा करने के लिए नहीं, इसे ईश्वर मानकर नहीं, किन्तु इसके गुणों को अपने अन्दर धारण करने के लिए। पुराने समय में बालक जब गुरुकुल में जाता था तो उसे गुरू कहता था–

सूर्यस्यावृतम् अनुव्रजस्वय।

'सूर्य के पीछे चलो मेरे बच्चे!' तेरी शिक्षा और तेरे जीवन का आदर्श सूर्य हो। तब गुरु से ज्ञान चाहने वाला शिष्य कहता था–

सूर्यस्यावृतम् अन्वावर्ते।

'मैं सूर्य के पीछे चलूँगा। और फिर क्या कहता था वह?

अहं भूयासं चारूदेव,
चारूदेवाहं भूयासम्,

'मैं सूर्य की तरह सुन्दर, चमकनेवाला और आकर्षणवाला बनूँगा, हाँ, बनूँगा अवश्य, इस सुन्दर सूर्य की तरह ही।'

वेद भगवान् ने सूर्य की महिमा में बहुत–कुछ कहा है। बार–बार वेद कहता है कि सूर्य की ओर देख, यह देखने के योग्य है–

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

'यह सूर्य इस जगत् में साँस लेने वाले और साँस न लेनेवाले– सबका आत्मा है।' यजुर्वेद का अन्तिम मन्त्र है–

योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्।
ओ३म् खं ब्रह्म।।

'यह जो सूर्य में चमकनेवाला, दिखाई देनेवाला, जगमगाता हुआ पुरुष है, वह मैं हूँ। मेरी और उसकी आत्मा एक है। यह आत्मा ही सारे संसार की रक्षा करनेवाला, अनन्त आकाश में फैला हुआ ब्रह्म यही है।'

बहुत गहरा सम्बन्ध है हमारी संस्कृति का इस सूर्यदेव के साथ। वेद में कितने ही मन्त्र आते हैं, जिनमें निरन्तर सूर्य की महिमा लिखी है। हमारे पूर्वजों ने तो 'सूर्य नमस्कार' नाम का एक व्यायाम भी जारी किया। इस व्यायाम में दस आसन करने पड़ते हैं। पहला आसन यह है कि सूर्य के सामने खड़े हो जाओ, तनकर खड़े हो जाओ। तब सूर्य की आँख से आँख मिलाओ। सूर्य की ओर एक क्षण के लिए देखो। तब आँखें बन्द करके, बन्द आँखों के अन्दर सूर्य की ज्योति को देखो। देखते रहो, देखते रहो, जब तक वह दृष्टि में आए; मध्यम होने लगे या समाप्त हो जाए तो फिर आँखें बन्द कर लो। अपने अन्दर ज्योति को देखो। ऐसा तीन बार करो और जबतक अन्दर की ज्योति दृष्टि में आए, तब तक सूर्य के मन्त्र पढ़ते रहो–

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः
ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः
ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः
ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा
सजूरूषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु।

ऐसे मन्त्र पढ़ते रहो। परन्तु एक कृपा करना मेरे भाई, दोपहर के सूर्य को देखकर उससे आँख मिलाने का यत्न नहीं करना, नहीं तो मुझे कोसते रहोगे कि आनन्द स्वामी ने हमारी आँखें खराब कर दीं। सूर्य–नमस्कार दोपहर के समय नहीं, सुबह–सवेरे, प्रभात के समय किया जाता है। जब सूर्य दूर–पूर्व में, उस स्थान से जहाँ धरती और आकाश मिलते हैं उदय होता है, उस समय यह नमस्कार करो। जिन लोगों ने सूर्य–नमस्कार की विधि चलाई वे कहते हैं–

आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने।
जन्मान्तरस्य सहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते।।

'जो प्रतिदिन इस प्रकार सूर्य–नमस्कार करता है उसके लिए हजारों जन्मों तक निर्धनता कभी आती नहीं। हजारों जन्मों तक वह धनवाला बना रहता है।' और क्या होता है?–

नमो धर्मः विधानाय नमस्ते कृत्संरक्षणे।
नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।।

'बार–बार सूर्य को नमस्कार करनेवाले का धर्म बढ़ता है, धर्म में उसकी रुचि बढ़ती है, उसके पुण्य की रक्षा होती है, उसे भगवान् के दर्शन होते हैं।' और फिर–

अकालमृत्युर्हरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम्।।

'उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती, उसकी सभी बीमारियाँ दूर हो जाती हैं।

ऋग्वेद के पहले मण्डल के 40 वें सूक्त में भी यही बात आती है कि सूर्य को देखने से कई प्रकार की बीमारियों का अन्त हो जाता है। एक मन्त्र है–

उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय।।

इसका अर्थ है–'पूर्व के उत्तरी भाग से उदय होता हुआ सूर्य हृदय के रोगों को और पीलिया को दूर कर देता है।' एक और मन्त्र है–

शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि।
अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि।।
–ऋ. 1। 40। 11

वेद की खूबी यह है कि इसके एक–एक मन्त्र से कई–कई अर्थ निकलते हैं। इस मन्त्र में कई जड़ी–बूटियों के नाम हैं जो सूर्य की कृपा से उत्पन्न होती हैं और जिनके प्रयोग से कई प्रकार के रोग नष्ट होते हैं। परन्तु आप बूटियों की बात छोड़िए। मन्त्र का सीधा–सा अर्थ यह है कि–'तोता जिस प्रकार फल को खाता–खाता उसे खोखला कर देता है, ऐसे ही जो रोग मनुष्य के शरीर को खोखला करते हैं! जो खराबियाँ हैं उन्हें ये सूर्य की किरणें शरीर से बाहर निकालकर बहा देती हैं।'

यह है सूर्य के साथ मनुष्य का सम्बन्ध। इसलिए वेद ने कहा– श्रेय मार्ग पर चलते हुए भी प्रेय मार्ग का सुख पाना चाहता है तो सूर्य के गुणों को अपने अन्दर पैदा कर, उसके पीछे चल। सूर्य के बारह नाम हैं–'मित्र' अर्थात् दोस्त; सूर्य सबका मित्र है, कोई उसके लिए पराया नहीं। उसका प्रकाश भारत में अन्धकार को दूर करता है तो फिर अमेरिका, अफ्रीका, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, और दुनिया के दूसरे भागों में भी यही करता है। वह सारी दुनिया का मित्र है। दूसरा नाम है–'रवि' अर्थात् पूजनीय, आदर योग्य, मान योग्य। तीसरा नाम है–'सूर्य' अर्थात् आगे ले–जानेवाला है, स्वयं चलनेवाला, दूसरों को चलानेवाला। चौथा नाम है–'भानु' अर्थात् सुन्दरता देने–वाला, चमक देनेवाला। जो लोग प्रतिदनि प्रातः के सूर्य को निकलता हुआ देखते हैं, उसके सामने बैठकर प्रभु का भजन और ध्यान करते हैं उनके मुख पर स्वयमेव एक सुन्दरता आ जाती है। पाँचवाँ नाम है– 'खग' अर्थात् जगानेवाला, इन्द्रियों को काम में लगानेवाला, प्रतिदिन प्रातः आकर, अपनी किरणों के हाथ बढ़ाकर वह सोते हुए लोगों से कहता है–"जागो! जागो!! सवेरा हो गया, उठो, अपने काम में लगो, दिन हो गया।"

शेष अगले अंक में....

सामवेद परायण यज्ञ एवं संगीतमय वेदकथा का भव्य आयोजन

आर्य समाज मानटाउन एवं महिला आर्य समाज सवाई माधोपुर के संयुक्त तत्वाधान में आर्य समाज मन्दिर में सामवेद परायण यज्ञ, भजन उपदेश एवं संगीतमय वेदकथा का आयोजन किया गया, जिसमें वैदिक प्रवक्ता, विद्वान् संन्यासी गुरुकुल की आचार्या इत्यादि पधारे। कार्यक्रम का शुभारम्भ चेयरमैन नगर परिषद् ने ध्वजारोहण के साथ किया। इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता एवं कथा वाचक ब्रह्मचारिणी बहिन सविता आर्य (मथुरा) रही एवं बहिन स्मृति आर्य (दिल्ली) एवं प्रतिभा आर्य ने सस्वर मधुर मन्त्रोच्चारण करते हुए सामवेद पारायण सम्पन्न कराया। इस कार्यक्रम में राजकुमारी दियाकुमारी, विधायिका, सवाई माधोपुर ने भी आयोजन में शिरकत की। उक्त आयोजन के अलावा 'व्यवहारभानुः' पुस्तक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, रंगोली एवं वैदिक जयघोष, स्लोगन लेखन की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। सामवेद पारायण यज्ञ की यजमान दम्पत्तियों ने पूर्णाहुति दी तथा वेद कथा के समापन के दिन पूर्व में आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये।

यदि ईश्वर वेदज्ञान न देता तो मनुष्य पशुवत् ही रह जाता

● खुशहालचन्द्र आर्य

ईश्वर ने मनुष्य के सहयोग के लिए जिससे वह अपना जीवन सुचारू रूप से चला सके, इस उद्देश्य से सृष्टि की रचना की जिसमें सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु, समुद्र, नदी–नाले, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, कीट–पतंग आदि बनाए। सृष्टि रचने के बाद ईश्वर ने तिब्बत के पठार पर एक कृत्रिम गर्भाशय बनाकर, उसमें रज–वीर्य का समावेश करके युवा लड़के–लड़कियाँ उत्पन्न किए जिससे आगे भी सृष्टि चलती रहे। यदि ईश्वर मनुष्य उत्पत्ति के समय युवाओं को उत्पन्न न करके यदि बच्चे या वृद्ध पैदा करता तो बच्चों का पालन–पोषण कौन करता? और वृद्धो से आगे का संसार नही चलता। इसीलिए नवयुवक व नवयुवतियाँ उत्पन्न की। ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे, जिनके कर्म सर्वोत्त्म होने से पुण्य आत्माएँ थी, उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, इनको उनके मुख से उच्चारित करवाया। वैसे ये वेद, ईश्वरीय ज्ञान है, ऋषियों के मुख से तो केवल उच्चारित ही करवाया है। जैसे माइक में मनुष्य बोलता है, माइक तो केवल उसकी आवाज को तेज आवाज मे प्रसारित कर देता है, ठीक इसी प्रकार ईश्वर, वेद ज्ञान को ऋषियों के हृदय मे प्रकाशित कर देता है और ऋषियों ने उस ज्ञान को अपने मुख से उच्चारित करके सब मनुष्यों के सामने प्रकट कर दिया। वैसे वह वेद ज्ञान उपस्थित सभी लोगों ने सुना, पर ब्रह्मा ऋषि जो सब से अधिक प्रखर और तीव्र बुद्धि वाले थे, उन्होंने वेद ज्ञान को सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और फिर वे उपस्थित लोगों को सुनाने लगे। उपस्थित लोग अपने पुत्र व पोत्रों को सुनाने लगे। इस प्रकार यह परम्परा लाखों, करोड़ों वर्षो तक चलती रही। जब कागज, स्याही, कलम, दवात का अविष्कार हो गया तो यह चारों वेद लिपिवद्ध कर दिये गये। तब से अभी तक चले आ रहे हैं। इसीलिए वेदों का दूसरा नाम श्रुति भी है यानी सुन व सुनाकर चलने वाला ज्ञान। मैं यहाँ यह लिखना अति आवश्यक समझता हूँ कि वैदिक धर्म की महानता यह है कि यह ईश्वरीय ज्ञान होने से मानव–मात्र का धर्म है। इसमें मानव–मात्र के लिए ही नही बल्कि प्राणी–मात्र के लिए भी कोई भेद–भाव या कोई छोटा–बड़ा नहीं है कारण ईश्वर सब का पिता है और सब जीव उसके पुत्रवत् हैं। इसीलिए किसी प्रकार का भेद–भाव होने का प्रश्न ही नही उठता। बाकी जितने भी मत, पंथ, सम्प्रदाय हैं जिनको धर्म भी कहा जाता है, वे सब मनुष्यों के बनाए हुए हैं। मनुष्य चाहे कितना भी महान् क्यों न हो, परन्तु मनुष्य होने के नाते अल्पज्ञ प्राणी है। उसमें अपना और पराये का भेद–भाव कम या अधिक अवश्य रहेगा। इसीलिए अन्य जितने भी मत, पंथ व सम्प्रदाय हैं, वे अपने ही मानने वालों का पक्ष लेते हैं यानी उनके ही हित चिन्तक हैं, दूसरों के नहीं। पर वैदिक धर्म ही एक मानवीय धर्म है जो सब के लिए समान है।

इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए यह लिखना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्य को पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ दी हैं, उनके लिए ईश्वर ने पाँच जड़ देवता जिनको तत्त्व भी कहते हैं, दिये हैं। जिनके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों में वह शक्ति आती है जिससे वे अपना काम कर पाती है। जैसे आँखों के लिए ईश्वर ने जड़ देवता अग्नि बनाया है जिससे आँखे रूप देख पाती हैं। इसी प्रकार कानों के लिए आकाश बनाया है जिससे कान शब्दों को सुनता है। नाक के लिए पृथ्वी बनाई है जिससे नाक गन्ध या दुर्गन्ध का ज्ञान करता है। जिह्वा के लिए ईश्वर ने जड़ देवता पानी बनाया है जिससे यह रस का अनुभव कर सके। त्वचा के लिए हवा बनाया है जिससे त्वचा स्पर्श का अनुभव कर सके। यह पाँचो तत्व ईश्वर मनुष्य की उत्पत्ति से पहले ही बना देता है। मनुष्यों में एक इन्द्री और होती है जिसे बुद्धि कहते हैं। यह मनुष्यों में अन्य जीवों से अधिक होती है। इस बुद्धि के लिए ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया है जिसके पढ़ने व सुनने से बुद्धि में ज्ञान की वृद्धि होती है और वेद ज्ञान से बुद्धि यह समझ पाती है कि मुझे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। वेद ज्ञान, मनुष्य का बुद्धि के द्वारा पथ–प्रदर्शन करता है जिससे वह अच्छे व पुण्यकार्यों को करता हुआ मोक्ष की ओर अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है वह मनुष्ययोनि में ही प्राप्त होता है। जैसे एक वैज्ञानिक कोई मशीन बनाता है, तो उसका कैसे प्रयोग किया जावे इसके लिए वह प्रयोग करने की विधि या तरीका एक छोटी पुस्तक मे लिख देता है जिसको देखकर उस मशीन का प्रयोग करने वाला प्रयोग करता है, इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्यों की उत्त्पत्ति के साथ ही यह वेद ज्ञान दे दिया जिसको पढ़कर या सुनकर अपने व दूसरों के जीवन को सुचारू रूप में चला सके और अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके।

यहाँ आपको यह बताना बहुत ज़रूरी है कि जीवों में दो किस्म का ज्ञान होता है। एक स्वाभाविक दूसरा नैमित्तिक। स्वाभाविक ज्ञान पशु–पक्षियों में अधिक होता है, कारण उनको इसी ज्ञान से पूरा जीवन व्यतीत करना होता है। इस ज्ञान से जीव खाना–पीना, सोना–जागना, उठना–बैठना तथा बच्चे पैदा करना ही नित्य कर्म कर सकता है, इसका जीव को कोई फल नही मिलता। नैमित्तिक ज्ञान वह होता है जो सीखने से सीखा जाये। यह ज्ञान पशु–पक्षियों में बहुत कम और मनुष्यों में बुद्धि से सम्बन्ध है। पर मनुष्य का बच्चा, पैदा होते ही पानी में नही तैर सकता। यदि पानी में छोड़ोगे तो वह डूब जायेगा और जबतक इसको तैरना सिखाया नहीं जायेगा तब तक वह पानी में नही तैर सकेगा, कारण यह मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान है।

मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान, खाने–पाने, सोने–जागने, उठने–बैठने तक ही सिमित है। बाकी काम वह सिखाने से सीखता है। स्वभाविक ज्ञान के कार्यो में मनुष्य को भी फल नहीं मिलता, बाकी नैमित्तिक ज्ञान से किये हुए अच्छे या बुरे कार्यो का ईश्वर मनुष्य को अच्छे कार्यो का सुख के रूप में, बुरे कार्यो का दुःख के रूप में फल देता है। मनुष्य की पढ़ाई, लिखाई सब नैमित्तिक ज्ञान से होती है। इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य को अपना तथा दूसरों के जीवन को सुखी व उन्नत बनाने के लिए उसे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नही करने चाहिए। इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य की उत्पत्ति करते ही, उसे चार ऋषियों द्वारा चार वेदों का ज्ञान दे दिया। जिनको सुनकर या पढ़कर वह अपने जीवन को, शुभ कार्यो को करते हुए उत्तयेत्तर उन्नत व समृद्धशाली बना सके, साथ ही अष्टांग योग द्वारा यम, नियमों को जीवन में धारण करते हुए, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान को करते हुए समाधि का आनन्द ले सकें और मृत्यु के बाद मोक्ष के परम आनन्द को ईश्वर के सान्निद्ध में रहते हुए प्राप्त कर सकें जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसके बाद मनुष्य को कोई इच्छा बाकी नहीं रह जाती है यानी यह मनुष्य की अन्तिम लक्ष्य है। यदि ईश्वर प्रारम्भ में ही मनुष्यों को वेद ज्ञान नही देता, तो मनुष्य भी अन्य पशु–पक्षियों की भाँति असभ्य रूप में रहता हुआ पशुवत् ही अपना जीवन व्यतीत करता। इसलिए सभी मनुष्यों को अभिष्ट है कि वह वैदिक धर्म को अपनाकर अपने व अन्यों के जीवन को उन्नत व सफल बनावे।

180 महात्मा गान्धी रोड, (दो तल्ला)
कोलकता–700007,
फोन: 22183825, 64505013(गद्दी),

श्रीमति अरुणा सतीजा को दिया गया प्रशस्ति पत्र

श्रीमति अरुणा सतीजा को राजस्थान सरकार'' सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्यो के लिये प्रशस्ति पत्र, स्मृतिचिन्ह, श्री फल एवं शाल ओढ़ा कर आदरणीय राज्य मंत्री श्री अरुण चतुर्वेदी जी द्वारा सम्मानित किया गया है। एक अक्टूबर 2014 को राज्य स्तरीय वृद्धजन समारोह का आयोजन पिंकसिटी प्रेस कलब जयपुर में उत्साह पूर्वक भव्य रुप में आयोजित किया गया।

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका– क्या कोई हमारा भविष्यफल बता सकता है?

समाधान– उत्तर है:–

गणित में नियम है:– संभावना का नियम (लॉ आफ प्रॉबेबिलिटि)। ये ज्योतिषी जितनी भी भविष्यवाणियाँ करते हैं, वे सभी लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि पर आधारित है। लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिट आप भी जानते हैं, हम भी जानते हैं, फिर उसने नया क्या बता दिया?

एक विद्यार्थी परीक्षा में बैठा है। वह या तो पास होगा या फेल होगा। सौ विद्यार्थी परीक्षा में बैठे है। क्या परीक्षा में बैठे सारे के सारे विद्यार्थी फेल हो जाएंगे? कुछ तो पास होंगे, कुछ की तो पास होने की संभावना है। यह है 'संभावना का नियम।' वहाँ 'संभावना का नियम' काम करता है। यदि कोई व्यक्ति बीस संभावनाएँ व्यक्त करता है तो कोई तो सच निकलेगी। वहाँ यह नियम लागू होता है, न कि भविष्यवाणी।

इस संभावना के नियम पर ये ज्योतिषी भविष्यफल बताते हैं। कथित वचनों में कुछ तो ठीक (सच सिद्ध) होना ही है। अगर सारे विद्यार्थी जाकर ज्योतिषी से पूछें कि – हम पास हो जाएंगे या फेल हो जायेंगे। संभावना के नियम के आधार पर, मान लीजिए ज्योतिषि उन सबको यह कह दे कि – तुम पास हो जाओगे या सारे के सारे फेल हो जाओगे, तो क्या, सौ में से सौ पास या फेल हो जाएंगे? नहीं होंगे न। कुछ तो पास होंगे, चालीस, पचास, साठ कुछ तो पास होंगे ही। जो पास हुए, वे संभावना के नियम से पास हुए।

जो पास हुए, क्या ज्योतिषी के कहने पर पास हुए? वे अपनी मेहनत से पास हुए। सारे के सारे इतने फिसड्डी नहीं होते हैं कि फेल हो जाएँ? जो मेहनत करते हैं, वे पास होते हैं, जो नहीं करते वे फेल होते हैं।

ज्योतिषियों को कुछ नहीं मालूम, इनके चक्कर में नहीं आना। लोगों में ऐसी भ्रांति फैल गई कि फलाने ज्योतिषी ने बताया था, इसलिए पास हो गए। अच्छा उसने सबको पास होने को कहा था, फिर बाकी चालीस जो फेल हो गए, उनका क्या? उसका क्या जवाब है? उसका कोई जवाब नहीं। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई लिखाई करने या न करने से पास–फेल होते हैं। उस ज्योतिषि के कहने पर नहीं होते।

अखबार में भी भविष्य नहीं पढ़ना चाहिए। इसको पढ़ने से नुकसान होता है। क्या नुकसान होता है? एक व्यक्ति ने अखबार पढ़ा। उसकी मेष राशि थी। अखबार में लिखा था कि "मेष राशि वालों को शनिवार को दुर्घटना की संभावना।" वह अच्छा ड्राइवर था, बढ़िया ड्राइविंग करता था। पर उसने पढ़ लिया, तो सुबह से ही नर्वस हो जाएगा और न होता तो एक्सीडेंट, फिर भी ठोक देगा। क्योंकि पेपर में लिखा है कि आज तो दुर्घटना होनी ही है। अब न पढ़ता तो नहीं ठोकता। पढ़ने के कारण बेचारा सुबह–सुबह घबरा गया। इसलिए अखबार में भविष्य नहीं पढ़ना चाहिए, सुनना भी नहीं चाहिए। बिल्कुल बेकार की बातें हैं, व्यर्थ की बातें हैं, हानिकारक हैं। ये सब भविष्यफल सुनने–पढ़ने वाले लोग और ज्योतिषी गलती करते हैं।

प्रसंगवश एक बात और बता देता हूँ। ये ज्योतिष वाले भविष्यफल बताते हैं। मेष, वृष, तुला, वृश्चिक इत्यादि बारह राशि होती हैं। भारत में कितनी जनसंख्या है? सौ करोड़ से ऊपर। इसमें से अस्सी–पचासी करोड़ आर्य (हिन्दुओं) में से जो इन राशियों को मानते हैं, उनकी संख्या सौ करोड़ में से अस्सी, पचासी करोड़ तो नहीं होगी। कुल राशियाँ हैं, बारह। एक राशि में करीब सात करोड़ व्यक्तियों के नाम आएंगे।

अब अखबार उठाइए और भविष्यफल देखिए। अखबार में लिखा है कि, "मंगलवार को तुला राशि वालों को लाभ होगा।" इसलिए मंगलवार को भारत के सात करोड़ व्यक्तियों को लाभ होना चाहिए। लेकिन होता है क्या लाभ? नहीं होता। तो मतलब यह हुआ कि, ये झूठ बोलते हैं।

जब आप और खोज करेंगे, तो पता चलेगा कि, 'मंगलवार को कई तुला राशि वालों का दिवाला निकला है। लाभ की तो बात क्या? बताइए, आपका भविष्यफल कहाँ गया? जिनका दिवाला निकल गया, वे जाकर क्यों नहीं ज्योतिषियों की गर्दन पकड़ते कि– "तुमने तो लिखा था अखबार में, कि लाभ होगा तो यहाँ हमारा दिवाला क्यों निकल गया?"

ज्योतिषि उपाय की भी गारंटी नहीं लेते कि यह उपाय करो, आपको निश्चित लाभ होगा। अगर वे उपाय की गारंटी भी लें, तो हम मान भी लें।

आपके स्कूटर में खराबी हो गई। आप मैकेनिक के पास जाइए। वह गारंटी लेता है कि – "इतने पैसे लूँगा, ठीक करके दूँगा।" ऐसे ही, अगर ज्योतिषि गारंटी दे कि– "हाँ, इतनी फीस लूँगा और यह मेरा उपाय सौ प्रतिशत कारगर होगा। नहीं हुआ, तो मुझ पर डबल फाइन करो।" कोई ज्योतिषि सामने आए, एक भी नहीं आता। सभी जनता को धोखा देते हैं। इसलिए इन लोगों से सावधान रहिए। इनके चक्कर में नहीं आना।

शंका– क्या योगी व्यक्ति भविष्य की बातों का ज्ञान कर सकता है?

समाधान – उत्तर है:–

कई चमत्कारिक घटनाएँ महापुरूषों के साथ भावुक अनुयायी लोग अपनी ओर से जोड़ देते हैं।

महर्षि दयानंद जी योगी थे। अगर उनको वास्तव में भविष्य की बातों का पता लग जाता होता, तो उन्हें यह क्यों नहीं पता चला कि "कल जगन्नाथ मुझे जहर देगा? "कितनी बार लोगों ने उनको जहर दिया, कितने प्रकार से दिया। यह सब उनको पता क्यों नहीं चला? इस तरह की अन्तः प्रेरणा (इन्ट्यूशन) नहीं हो सकती।

यह केवल तुक्का है। सौ बार व्यक्ति अंदेशा लगाता है, दो बार सही निकलता है। सह है – लॉ ऑफ प्रोबेबिलिटी, देयर इन नो इन्ट्यूशन।

आजकल टी.वी. चैनलों पर, अखबारों आदि में जो भी भविष्यफल बताया जाता है, उसके पीछे भी यही संभावना का नियम ही काम करता है।

यदि कोई व्यक्ति दावा करता है कि वह वास्तव में भविष्य की घटनाओं को जानता है तो उसकी बातें पूर्ण सत्य सिद्ध होनी चाहिए। जैसे–गणित के अध्यापक गणित के प्रश्नों का पूर्ण सत्य उत्तर देने का दावा करते हैं, और उनके उत्तर पूर्ण सत्य ही होते हैं। परन्तु भविष्यवाणी करने वाले क्या अपना भविष्य भी ठीक प्रकार से जानते हैं? यदि नहीं जानते, तो दूसरों का भविष्य क्या जान पाएँगे? और क्या बता पाएँगे? एक इंजीनियर अपने लिए तथा दूसरों के लिए भी मकान बनाता है। उसकी विद्या सत्य है। भविष्यवक्ता न अपना भविष्य जानता है, न दूसरों का इसलिए यह भविष्यवाणी झूठी है।

व्यावहारिक रूप से ऐसे भविष्य की बातों की कोई भी भविष्यवाणी नहीं कर सकता। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है – यह सिद्धांत है। अगर व्यक्ति स्वतंत्र है, तो वह कुछ भी कर सकता है। अगर व्यक्ति स्वतंत्र है, तो वह सुधर भी सकता है, बिगड़ भी सकता है।

यदि भविष्यवाणी सत्य हो, तो इसका अर्थ होगा कि सब कुछ पहले से निश्चित है। तब व्यक्ति कर्म करने में परतन्त्र हो जाएगा। यदि व्यक्ति कर्म करने में परतन्त्र है, तो उसे दण्ड नहीं दिया जा सकता। क्योंकि परतन्त्र को दण्ड देना, अन्याय है।

किसी व्यक्ति ने अपनी बन्दूक से चार व्यक्तियों को मार दिया। अब दण्ड, मारने वाले व्यक्ति को मिलेगा, या बन्दूक को? मारने वाले व्यक्ति को मिलेगा। चारों व्यक्ति गोली से मरे, गोली छूटी बन्दूक से तो बन्दूक को दण्ड मिलना चाहिए। परन्तु बन्दूक को दण्ड नहीं दिया जाता। क्योंकि बन्दूक परतन्त्र है। बन्दूक स्वतन्त्र नहीं है। बन्दूक चलाने वाला व्यक्ति स्वतन्त्र है। इसलिए बन्दूक चलाने वाले का दण्ड दिया जाता है। यही न्याय है। इसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वतंन्त्रता से किए गए कर्मो का फल (सुख–दु:ख) भोगता है।

गणित वाला ज्योतिष ठीक है, पर भविष्यफल (प्रिडिक्सन) गलत है। एक अंतिम बात कह देता हूँ, आप समझ जायेंगे। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। स्वतंत्र किसको कहते हैं, जो अपनी इच्छा से काम करे या दूसरों के दबाव से काम करे? जो अपनी इच्छा से काम करे, वह स्वतंत्र है। तो आपका भविष्य पहले से कोई कैसे लिख देगा? अगर पहले से लिखा है, और वही होना है, तो आप परतंत्र हो गए।

सच तो यह है कि आप जब चाहे, अपनी योजना बदल सकते हैं, जब चाहे बना सकते हैं। हमारी मर्जी है। हम कर्म करने में स्वतंत्र है। अपने भविष्य के निर्माता हम स्वय हैं। एक–एक मिनट में हम अपना भविष्य बनाते हैं। आप भाषा में बिगाड़ कर दीजिए, देखिए आपका भविष्य तुरंत बिगड़ जाएगा। आपकी क्रिया ठीक–ठीक चल रही है, आपका भविष्य अच्छा है। आप गलत क्रिया शुरु करो, देखो आपका भविष्य तुरंत बिगड़ जाएगा। इस प्रकार अपना भविष्य बनाना–बिगाड़ना हमारे हाथ में है। इन कागज के पोथी–पत्रों में कुछ नहीं लिखा।

जब तक हम स्वतंत्र हैं, वह ज्योतिषी हमारा भविष्य कैसे जान लेगा? हमने कोई काम अब तक सोचा ही नहीं, योजना ही नहीं बनाई, कोई निर्णय ही नहीं किया कि दो महीने बाद क्या करूँगा। जब मैंने ही नहीं सोचा, तो ज्योतिषी उसको कैसे जान लेगा? ईश्वर भी नहीं जानता, तो ज्योतिषी उसको क्या जानेगा? फिर वह बताता है, तो इसका अर्थ है कि वह तुक्का मारता है। उसकी जितनी बातें ठीक होती है, लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि से ठीक होती है।

प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र है। जब वह स्वतन्त्र है, तो पहले से कुछ लिखा या निश्चित नहीं है। जब पहले से कुछ भी निश्चित नहीं है, तो सिद्ध हुआ कि– "भविष्य कथन झूठा है।"

दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन, गुजरात

thearyasamaj.org

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी नवयुवकों के प्रेरणा स्रोत

● डॉ. सहदेव वर्मा

आर्य समाज ने आर्य जाति तथा भारत देश को जगाकर जगत में प्राचीन संस्कृति और सभ्यता को पुनर्जीवित कर अत्यन्त कल्याण कारी कार्य किया है। उन्नीसवी शताब्दी में जब आर्यजाति आलस्य, निद्रा तथा पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष के साथ अनेक पाखण्डों के चक्र में फँसी थी। तब उस सदी के उत्तरार्द्ध में महर्षि दयानन्द ने आर्य जाति को सत्य, न्याय और धर्म का पथ दिखलाया। उसी समय पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे अनेक युवक उस अंधकार में राह तलाश रहे थे।

उस समय पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति की जो बयार अबाध गति से बह रही थी। अनेक भारतीय नव युवक पाश्चात्य विज्ञान की उस धुआँ धार धारा में बह रहे थे। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी भी विज्ञान की उसी चका चौंध से प्रभावित होकर नास्तिकता की सरिता में गोते खा रहे थे। परन्तु मनुष्य के जीवन में किसी समय अचानक, जाने–अनजाने ऐसे मोड़ आ ही जाता है, जो उसे पतन के गहरे गर्त में गिरने से उबार लेता है। महर्षि के अंतिम संस्कार के कुछ मौन पल ऐसे ही थे, जिन अनकहे दृश्यों ने, कट्टर नास्तिक गुरुदत्त को ऋषि का अनन्य अनुयायी बनाकर दृढ़ आस्तिक बना दिया, और आजन्म उन्होंने अपना तन, मन, धन, सब कुछ आर्य समाज की सेवा में समर्पित कर दिया।

विद्यार्थी जी का जन्म 26 अप्रैल सन् 1864 को मंगलवार के दिन हुआ था। इनके पिता श्री रामकृष्ण जी अध्यापक थे, अतः गुरुदत्त को अच्छी शिक्षा दिलवाना चाहते थे। उन दिनों पंजाब में उर्दू–फारसी का बोल बाला था। पढ़ाने वाले भी प्रायः मुल्ला, मौलवी ही, होते थे। अतः लाला रामकृष्ण जी ने मुल्तान (इनका जन्म स्थान) में ही कचहरी में कार्य करने वाले एक मुसलमान दफ्तर को उर्दू की वर्ण–माला सिखाने के लिए रख दिया। गुरुदत्त ने उर्दू वर्ण–माला शीघ्र ही सीख ली। परन्तु एक दिन एक विचित्र घटना घटित हुई। टीचर ने उस दिन सिखाया कि 'आलिफ़' और 'बे' को मिलाकर बनता है–'अब'–पर गुरुदत्त ने यह बात नहीं मानी, और कहा कि आलिफ़ और बे से 'अब' कैसे बन गया? यह तो 'आलिफ' 'बे' ही रहना चाहिए। वास्तव में यह घटना गुरुदत्त के जीवन में 'होन हार बिरवान के होत चीकने पात–' वाली कहावत को लेकर आई। अस्तु..............

गुरुदत्त के इस व्यवहार से टीचर नाराज हो गये और उन्होंने इनके पिता से शिकायत कर दी। राम–कृष्ण जी गुरुदत्त की बाल बुद्धि के तर्क से भीतर ही भीतर खुश हुए, परन्तु ऊपर से कहा–'बेटा–मास्टर जी की बात मान लेनी चाहिए।' जब गुरुदत्त ने उर्दू की वर्णमाला, तथा अक्षर जोड़ने भी सीख लिये तो शर्मा जी ने अपने ही स्कूल में प्रविष्ट करा दिया। आठ वर्ष की आयु होने तक उन्होंने उर्दू, फारसी तो सीख ही ली थी। साथ ही अंग्रेजी का श्री गणेश भी कर दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में बड़ी उथल–पुथल रही। उभरती पीढ़ी के सामने कोई विशेष आदर्श नहीं था। शिक्षा के क्षेत्र में लार्ड मैकाले की तूती बोल रही थी। ऐसी स्थिति में या तो मस्जिद की ओर या फिर गिरजे की तरफ़ लोग दौड़ रहे थे। देश में अनगिनत मत मतान्तर पाँव पसार रहे थे। ऐसे में एक तपस्वी सन्यासी एक मशाल लेकर लोगों को अन्धकार में राह दिखा रहा था। उस तपस्वी का नाम था स्वामी दयानन्द और उस प्रज्वलित मशाल का नाम था 'आर्य समाज'। भाषा के नाम पर उर्दू फारसी या अंग्रेजी चलती थी। संस्कृत या तो पण्डितों की जेब में थी या फिर शब्द कोष में। पश्चिमी शिक्षा विदों ने तो उसे मृत भाषा करार दिया था। ऐसी स्थिति में एक दिन जब गुरुदत्त अपने मित्र के पास गया और वहाँ उसने 'मनुस्मृति' पुस्तक देखी, तो उसे ठुकराते हुए गुरुदत्त ने मित्र से कहाः– 'चेतनानन्द'! किस गली सड़ी और मृत–भाषा की पुस्तके पढ़ते हो?' गुरुदत्त को क्या पता था कि आज जिस भाषा को वह गली सड़ी और मृत कह रहा था उसी (भाषा) के लिये एक दिन सर्वस्व दाँव पर लगा देगा। लगभग उसी समय इतिहास के एक अध्यापक इतिहास के मूल अंग्रेजी शब्दों को संस्कृत में भी बताते थे, तो गुरुदत्त के मन में विचार आया कि 'क्यों' न संस्कृत पढ़कर स्वयं ही मूल तक जाऊँ? जब कोई अध्यापक उन्हें अलग से संस्कृत पढ़ाने के लिए तैयार न हुआ तो उन्होंने डॉक्टर 'वेलनटाइन' रचित 'ईजीलैसन्स' इन संस्कृत ग्रामर' पढ़ी। अब तो उन्हें संस्कृत में धीरे–धीरे रस आने लगा। तभी उन्हीं किसी के पास ऋषि दयानन्द कृत 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' मिल गई उसका संस्कृत भाग 'संस्कृत–कोष' की सहायता से पढ़ा और जाना। उसे समझ कर तो जैसे गुरुदत्त की आँखे खुल गई।

लगभग इसी समय उन्होंने अपने मित्रों चेतनानन्द और रैमलदास से आत्मा परमात्मा के विषय में बातें की। वे दोनों मुलतान आर्य–समाज के सदस्य थे। उनकी सलाह पर गुरुदत्त ने सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन किया। उसे पढ़कर तो गुरुदत्त को लगा जैसे वह अन्धेरे से प्रकाश में आ गया है। अतः गुरुदत्त ने जून 1880 में आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। अब वे नियमित रूप से आर्यसमाज के सत्संगों में जाने लगे। वहाँ ऋषि दयानन्द कृत प्रायः सभी ग्रंथों का अध्ययन किया। प्रतिभाशाली तो थे ही, अभी दसवीं कक्षा में ही पढ़ रहे थे। परन्तु उन्होंने संस्कृत का अच्छा अभ्यास कर लिया था।

गुरुदत्त की स्वाध्याय में तो रूचि थी ही, इसलिए उन्होंने मिल्टन् शेक्सपियर, स्पेन्सर, हक्सले आदि का डट कर परायण किया। परन्तु संस्कृत का अभ्यास नहीं छोड़ा। मैट्रिक करने के बाद आपने लाहौर के कॉलिज में प्रवेश कर लिया। आर्य समाज का सदस्य होते हुए भी इन्होंने जब डार्विन तथा हर्बर्ट आदि को पढ़ा तो ईश्वर तथा पुनर्जन्म के बारे में मन में शंकाएँ घुमड़ती रहीं परन्तु लाहौर आर्य समाज के प्रधान लाला साईंदास जी किसी भी कीमत पर गुरुदत्त को खोना नहीं चाहते थे, अतः उनका व्यवहार गुरुदत्त के प्रति अत्यन्त आत्मीयता तथा स्नेह युक्त रहता था। वे सदा नव युवकों को आर्य समाज की ओर आकर्षित करने के लिए तत्पर रहते थे। परिणामस्वरूप उन्हें कोर्स की पुस्तकें पढ़ने का समय कम ही मिलता था। परन्तु जितनी देर पाठ्य पुस्तकों को पढ़ते थे उनका सार ग्रहण कर ही लेते थे। नतीजा यह हुआ कि 1883 में एफ.ए. में पंजाब भर में प्रथम रहे।

उधर जोधपुर में तीक्ष्ण विष दिये जाने के कारण ऋषि दयानन्द दुर्बल अवस्था और भयानक पीड़ा की स्थिति में अजमेर में थे। अनेक ऋषि–भक्त उनकी सेवा के लिए अजमेर के लिए चल पड़े। आर्य समाज लाहौर की ओर से श्री जीवनदास तथा श्री गुरुदत्त विद्यार्थी ऋषि की सेवा के लिए अजमेर पहुँचे। जब किसी औषधि से भी आराम न हुआ तो अजमेर के सिविल सर्जन मि. न्यूमैन को बुलवाया गया। डॉ. न्यूमैन ऋषि को देखकर आश्चर्य चकित रह गये। इतनी भयानक पीड़ा सारा शरीर ऐड़ी से चोटी तक फफ़ोलो से भरा हुआ फिर भी ऋषि के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान। 30 अक्तूबर 1883 समय सायंकाल लगभग 4 बजे। गुरुदत्त विद्यार्थी जी को छोड़कर ऋषि ने सब भक्तों को पीछे खड़े होने का आदेश दिया। केवल विद्यार्थी जी को निकट बुलाकर कुछ कहा। क्या कहा – किसी ने नहीं सुना। कुछ समय के लिए समाधिस्थ हुए। वेद मंत्रों का पाठ किया। गायत्री का जाप किया। तदन्तर बोलेः– 'हे दयामय! हे सर्वशक्तिमान! हे ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा तूने अच्छी लीला की। फिर श्वास को रोका और एक दम बाहर फेंक दी और बस।' समय शाम 6 बजे दिनांक 30 अक्तूबर 1883, मंगलवार, तदनुसार कार्तिक बदी आवस्या, संवत् 1940' दीपावली। उस समय कमरे में ईश्वर के अतिरिक्त महर्षि तथा गुरुदत्त । बस................

गुरुदत्त विद्यार्थी ने यह डेढ़ दो घन्टे का दृश्य देखा तो–देखते ही रह गये। पौने सात फुट लम्बा शरीर, उसमें रोम रोम से विष फूट फूट कर बह रहा है। असाध्य रोग उसकी पीड़ा, पर चेहरे पर ऐसी मुस्कान। मानों कुछ हुआ ही नहीं। गुरुदत्त किससे क्या कहें? ऋषि ने महाप्रयाण से 5–10 मिनट पहले उनकी ओर देखा अवश्य था पर वह दृष्टि ऐसी मर्म भेदी थी, कि जो लम्बे अध्ययन के पश्चात् डार्विन, स्पेन्सर, न्यूटन तथा बेकन से न मिल सका, वह संतोष और तृप्ति आज अनायास ही मिल गई। गुरुदत्त का जन्म मंगलवार का हुआ था, और पुनर्जन्म भी मंगलवार को ही हुआ। जब गुरुदत्त अजमेर से लाहौर लौट आये। अब तो आर्य समाज में एक ही चर्चा थी, ऋषि का स्मारक बनने, बनाने की। लाहौर आर्य समाज की विशाल सभा में कई वक्ता बोले और सबसे बाद में बोला–एक उन्नीस वर्षीय नवयुवक सर्वथा अनुभव हीन। परन्तु गुरुदत्त विद्यार्थी ने भाव पूर्ण तथा हृदय दावक शब्दों में ऋषि के स्वर्ग वास का स्वयं अनुभव और आँखों देखा मार्मिक दृश्य चित्रित किया तो क्या बच्चे क्या युवक और वृद्ध तथा देवियों का तो कहना ही क्या, पाषाण हृदय भी पिघल गये। श्रोताओं के नेत्रों से अविरल अश्रु धारा रुकने का नाम नहीं लेती थी। उपस्थित जन सुमदाय अबोध बालकों की तरह सुबक रहा था। अन्त में अपने को संभालते हुए–विद्यार्थी जी ने डी.ए.वी. स्कूल तथा कॉलिज के रूप में ऋषि का स्मारक बनाने का सुझाव रखा तो उसे उपस्थित जन समुदाय ने बहुत पसन्द किया और अपील न करने पर भी काफ़ी नकद राशि दान में प्राप्त हुई। देवियों ने तो अपने स्वर्णाभूषण तक उतार कर दे दिए।

ऋषि दयानन्द के स्वर्गवास के कारण आर्य सामाजिक क्षेत्रों में सर्वत्र उदासी का वातावरण छाया हुआ था। जगह–जगह शोक सभाएँ हो रही थी। आर्य समाज लाहौर में ऋषि की यादगार को स्थायी बनाने के लिए डी.ए.वी कॉलिज की स्थापना का निर्णय हो चुका था। अब अन्तरंग कमेटी के सामने दो

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

उर्मिला से भी आगे...

● इन्द्रजित देव

मर्यादा पुरुषोत्तम राम को जब 14 वर्षों के लिए वनगमन का आदेश कैकेयी ने सुनाया तो राम जी ने सहर्ष स्वीकार किया उनकी धर्मपत्नी भी साथ गईं तथा अनुज लक्ष्मण भी पीछे नहीं रहे परन्तु लक्ष्मण की धर्मपत्नी उर्मिला नहीं गईं। वे क्यों नहीं गईं, इस विषय में रामायण के रचनाकार ऋषि वाल्मीकि ने कुछ नहीं लिखा। पति–वियोग में उर्मिला ने 14 वर्ष किस प्रकार की मानसिक व शारीरिक स्थिति में व्यतीत किए, यह वही जान सकते हैं, जिनपर ऐसी घटना घटित होगी या हुई होगी परन्तु इतना निश्चित है कि जनक सुता उर्मिला का त्याग व योगदान उपलब्ध इतिहास में अपूर्व था। उनके इस योगदान के बिना लक्ष्मण अपने अग्रज और भाभी की सेवा व सुरक्षा के प्रति अपनी निष्ठा का दृढ़ता व सफलता से पालन नहीं कर सकते थे। आज लक्ष्मण इतिहास में अपने चरित्र व समर्पण के आधार पर आदर्श भाई व देवर के रूप में स्थापित हैं। अंग्रेज की कहावत Behind every great man there is a woman अर्थात् प्रत्येक महापुरुष की सफलता के पीछे किसी महिला का योगदान होता है, लक्ष्मण व उर्मिला के जीवन पर पूर्णतः सही लागू होती है।

उर्मिला को वाल्मीकि ने ही नहीं, कालिदास, भवभूति तुलसीदास तथा अन्य किसी संस्कृत व हिन्दी कवि ने वर्णनीय नहीं समझा। हाँ, आधुनिक काल में मैथिलीशरण गुप्त ने अपने महाकाव्य ''साकेत'' में कुछ सीमा तक उपस्थित किया है परन्तु वह साहित्यक दृष्टि से तो स्वागतयोग्य है, मार्मिक है परन्तु उर्मिला के समकालीन ऋषि वाल्मीकि ने ही जब कुछ विशेष वर्णन नहीं किया तो अन्यों से शिकायत कैसी?

अभी जब भारतीय लोकसभा के चुनावों की प्रक्रिया चल रही थी तो एक आधुनिक उर्मिला का नाम प्रकट हुआ है जिसका नाम जशोदाबेन है। वह 45–50 वर्षों से पति से पृथक पिता के घर में रहकर शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करती रहीं हैं। इनका विवाह छोटी अवस्था में हो गया था व तरुणावस्था में ही इनके पति नरेन्द्र मोदी अपनी इच्छा से एक राष्ट्रीय संगठन को अर्पित हो चुके थे व गृहस्थ के कार्यों तक सीमित होने तथा गृहस्थ आश्रम में टिकने की उनकी प्रवृत्ति न थी। अब प्रधानमंत्री बन गए हैं। चुनाव अभियान के दिनों में उनके इस कार्य को विपक्षियों ने नारी वर्ग–का अपमान बताया था व स्त्री जाति के प्रति उपेक्षा करने का प्रमाण घोषित किया था जो उनके अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए साधन ही था।

ऐसे लोगों को हम स्मरण दिलाते हैं कि छत्रपति शिवाजी के गुरु समर्थ गुरु रामदास का जब विवाह–संस्कार हो रहा था तो महाराष्ट्र की स्थानीय परम्परानुसार एक अवसर पर पुरोहित ने उन्हें कहा–''सावधान।'' यह सुनते ही समर्थ गुरु ने कहा– ''बहुत–बहुत धन्यवाद, पुरोहित जी!'' यह कहकर उन्होंने विवाह मण्डप में बैठी वधू पर क्या बीती व भविष्य में क्या हुआ, मुझे पता नहीं पर इतना निश्चित है कि रामदास जी विवाह–मण्डप से ही उठ गए थे। क्या नरेन्द्र मोदी के विरोधी रामदास गुरु को स्त्री जाति का विरोधी घोषित करने का साहस करेंगे? इसी प्रकार स्वामी रामतीर्थ ने अपनी पत्नी की इच्छा–स्वीकृति के बिना उसका परित्याग करके संन्यास ग्रहण कर लिया था व देश–विदेश में अपने उपदेशों से भारत को ख्याति दिलाई थी। क्या विपक्षी रामतीर्थ को अपनी पत्नी का अपमान करने वाला स्वीकारते हैं? आदि शंकराचार्य बाल्यावस्था में ही वैराग्य की ओर अग्रसर हो रहे थे परन्तु उनकी माता उन्हें संन्यास लेने से रोकती रहीं एक दिन माता को उन्हें स्वीकृति देनी ही पड़ी थी तथा वे माता को अकेली छोड़कर संन्यासी बन ही गए थे। स्पष्ट है, उन्होंने माता की सेवा नहीं की। क्या आदि शंकराचार्य को इस आधार पर मातृ शक्ति का शत्रु इतिहास में किसी ने माना है? आज से अढ़ाई सहस् वर्ष पूर्व कपिलवस्तु का राजकुमार सिद्धार्थ एक रात चुपचाप राज महलों, अपनी पत्नी यशोधरा व नवजात पुत्र राहुल को त्यागकर वन में चला गया था। बाद में यही सिद्धार्थ महात्मा बुद्ध बनकर संसार में प्रसिद्ध हुआ व इतिहास में नारी जाति का द्रोही उसको किसी ने नहीं कहा। गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी पत्नी के कहने से ही ईश भक्ति का जो मार्ग ग्रहण किया, उसमें सैद्धान्तिक स्तर हमारा मत भेद हो सकता है परन्तु उन पर अपनी पत्नी को बीच में छोड़कर भाग जाने का आरोप किसी ने नहीं लगाया। सुकवि कालिदास ने भी पत्नी का त्याग किया परन्तु इतिहास में संस्कृत के श्रेष्ठ साहित्यकारों में अपना काम व नाम स्थापित करके स्वयं व भारत को गौरवान्वित किया है। इसी प्रकार गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक गांव में उत्पन्न हुए मूलशंकर के माता–पिता ने जब उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके विवाह की तैयारी कर ली थी तो वह एक रात घर, माता, पिता व भाई–बहनों को सोता छोडकर चुप–चाप चला गया था। माता जी की सेवा वह भी न कर पाया परन्तु अन्धविश्वासों से ग्रस्त व वेदों से विमुख संसार को अपनी घोर तपस्या व कठिन साधना से प्राप्त शारीरिक व आध्यात्मिक शक्ति द्वारा जो उपकार किए, वे अपूर्व हैं, अनुपम हैं। यही मूल शंकर संन्यासी बनकर महर्षि दयानन्द सरस्वती नाम से सुविख्यात हुआ। एक और महापुरुष का नाम भी इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है। वे हैं –मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र। उनके पिता दशरथ द्वारा कैकेयी को दिए दो वरों का अनुचित लाभ लेने के कैकेयी के कुप्रयास से ही राम को वन जाना पड़ा परन्तु वे वन में जाएं, ऐसा न तो दशरथ चाहते थे तथा न ही कौशल्या की इच्छा थी। पिता दशरथ तो यहाँ तक कह बैठे कि हे राम! तेरे वन जाने से मैं न बचूँगा। मैं तो वचनों में बँधा हूँ। प्रजा तुम्हारे साथ है। तुम मुझे बंदीगृह में डालकर राजा बन जाओ। मैं बच जाऊँगा।'' क्या राम ने माता–पिता की इच्छा पूर्ण की? क्या माता–पिता की इच्छा के विरुद्ध उनके वनगमन को अधर्म कहने का कोई व्यक्ति या राजनैतिक दल दुस्साहस कर सकता है?

मैं नरेन्द्र मोदी व जशोदाबेन के प्रसंग में यह निवेदन करना चाहता हूँ कि जब कोई अपनी और केवल अपनी शारीरिक व भौतिक इच्छाओं व आवश्यकताओं की ही पूर्ति में स्वयं को अर्पित कर देता है तो वह सामान्य व्यक्ति ही कहलाता है परन्तु जब व्यक्ति अपने घोंसले में न रहकर उड़ने को विस्तृत गगन तलाशता है, तब उच्चआदर्श तथा उच्च विचारवालों के सामने परिवार से भी अधिक लोकहित रहता है। यदि कोई आलोचना उससे माता, पिता, पत्नी व पति की ही सेवा करता हुआ देखना चाहता है तो उसका ऐसा प्रयास या ऐसी इच्छा करना ऐसा ही है, जैसे कोई गगन विहारी को घोंसले में सीमित करता है। समुद्र को घड़े में भरने की चेष्टा भी इसे आप कह सकते हैं। परंतु, याद रखिए कि समुद्र घड़े में समा ही नहीं सकता। इसी कारण दयानन्द, राम, शंकराचार्य, रामतीर्थ, समर्थ गुरु रामदास तथा बुद्ध घर–परिवार तक सीमित नहीं रहे। लौकिक व पारिवारिक कामनाओं आगे राष्ट्रीय व आध्यात्मिक इच्छाओं का वरण करना पाप नहीं। अतः स्वहित से अधिक लोकहित को ही मुख्य रखकर घर–परिवार का उन्होंने त्याग किया। इनको कितनी सफलता मिली, यह एक पृथक प्रश्न है परन्तु यह निश्चित है कि उनके त्याग व उनकी विस्तारता ने ही उनकी यश तथा प्रसिद्धि दिलाई तथा लोककलयाण हुआ। राम, बुद्ध व दयानंद घर न छोड़ते तो दशरथ व कौशल्या, शुद्धोधन व मायादेवी तथा कर्षन जी व अमृतबाई संसार में अपरिचित ही रहते। लक्ष्मण यदि राम के साथ वन में न जाते तो अपने ही भाई शत्रुघ्न की तरह रामायण का एक सामान्य पात्र ही कहलाते। उर्मिला यदि लक्ष्मण के त्याग में बाधा बनतीं तो कैकेयी की तरह वे भी रामायण की एक दृष्टा पात्र ही कहलातीं। उर्मिला और लक्ष्मण के त्याग व समर्प ने उन दोनों को संसार में श्रद्धास्पद बनाया है।

जशोदाबेन ने लगभग 45–50 वर्षों तक अपना जीवन एक शिक्षिका के रूप में पूर्ण ब्रह्मचारिणी रहकर सादगी व शालीनता से जिया है। यह अवधि उर्मिला के पति से वियोग की अवधि से लगभग साढ़े तीन गुणा अधिक है। इस अवधि में उसने कुछ माँगा नहीं, न ही किसी से अपने पति की तनिक भी शिकायत की है। फिर विपक्षियों को नरेन्द्र से क्यों शिकायत थी? वास्तव में इनको न तो जशोदाबेन से सहानुभूति है तथा न ही अपने देश से लगाव था। यह जो भी है, वह नरेन्द्र मोदी को जनता की नजर में गिराकर वोट प्राप्त करने का प्रयास था। यदि इन्हें मातृ–शक्ति के सम्मान करने की तड़प थी तो इन्हें राम, दयानन्द एवं शंकराचार्य की निन्दा करनी–चाहिए तथा यदि विपक्षियों को पत्नियों के अधिकारों की रक्षा करने की चिन्ता थी तो उन्हें बुद्ध, रामतीर्थ, लक्ष्मण तथा समर्थ गुरु रामदास की तरफ अंगुली पहले उठानी चाहिए भी परन्तु ऐसा उन्होंने इसलिए नहीं किया क्योंकि इन महापुरुषों की निन्दा करने से आज के वोटरों के वोट इन्हें नहीं मिल सकते थे। यह सारा वोटों का खेल था।

चूना भट्टियाँ,
सिटी सेन्टर के निकट,
यमुनानगर (हरियाणा) 135001

पाठक कृपया ध्यान दें कि आर्य जगत् के अगले दो अंक नही निकल पाएंगे।
16 नवम्बर 2014 का अंक ''महात्मा हंसराज विशेषांक'' के रूप में प्रकाशित होगा।
–सम्पादक

सम्पूर्ण पृथ्वी पर आर्यों का शासन था

● डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

भारत देश में विदेशी आक्रमण कारियों ने बार–बार आक्रमण कर यहां हर प्रकार से क्षति पहुँचायी यहां तक कि इतिहास को भी बदलने का पूरा प्रयास किया और कहा कि आर्य बाहर से आए इसमें विदेशियों का स्वार्थ छिपा था जब कि आर्य संस्कृति यहां से सम्पूर्ण विश्व में फैलती रही इस विषय पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विस्त्रत प्रकाश डाला है।

सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में ऋषि ने लिखा है ''सृष्टि से ले के पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्व भौम चक्रवर्त्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एक मात्र राज्य था अन्य देशों में छोटे–छोटे अर्थात् माण्डलिक राजा रहते थे''–स. प्र. एका.समु.

ऋषि ने लिखा है कि महाभारत युद्ध में चीन का राजा भगदत्त, अमेरिका का बब्रुवाहन, यूरोप का विडालाक्ष, ईशन का राजा शलय यह सब राज सूय यज्ञ एवं महाभारत युद्ध में आज्ञानुसार आए थे।

भारत भूमि धन सम्पदा सुवर्ण हीरा मोती व ज्ञान विज्ञान तथा विकसित सभ्यता व संस्कृति की भूमि रही है यहां शिक्षा के बड़े–बड़े केन्द्र गुरुकुल आश्रम तथा विश्व विद्यालय थे नालंदा व तक्ष शिला उन पुराने संस्थानों में से जीवित प्रमाण हैं ऋषि ने कहा है कि ''इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत साधन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य पुरुषार्थ रहितता–ईर्ष्या, द्वेष, विषया शक्ति और प्रसाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं जैसे कि मद्य मांस सेवन बाल्यावस्था में विवाह और स्वेच्छा चारादि दोष बढ़ जाते हैं''।

आज उस विशाल महान देश की स्थिति दुष्टाचार पाप, अपराध व असत्य तथा अन्याय से हीन हो गई है जो कि सब के सामने है गौरव शाली इतिहास को विकृत करने का पूरा प्रयत्न किया गया कृष्ण का चरित्र विकृत किया गया राम पर भी दाग लगाने का प्रयत्न किया गया पुराणों में तो ऋषियों को जीव जन्तु व पशुओं से जन्मा बताया गया है उसी प्रकार अनेकों ने आर्यों को भी बाहर से आया बता दिया। सोचने की बात है आर्य यदि बाहर से आते तो वह वहां के स्थानों का नाम भी साथ लाते समुद्र पर्वत नदियों के नाम उनके शास्त्र व इतिहास के साथ जुड़े होते। नील, पूफ्रेट्स पनामा, पुर्तगाल, नार्वे आदि के नाम साथ लाते वहाँ के देवी देवताओं के नाम यहाँ होते अपोलो आदि की पूजा होती सूर्य के नाम के स्थान पर अपोलो ही होता परन्तु यह उनकी भूल रही आर्यों को बाहर से आया बताते रहे आर्यों के साथ आज भी गंगा जमुना कृष्णा गोदावरी सरयू आदि का ही नाम लाखों करोड़ों वर्षों से जुड़ा है पांच हजार वर्ष महाभारत युद्ध हुआ वह भीम अर्जुन युधिष्ठिर आर्य थे राम व दशरथ रघु दिलीप उनसे भी सहस्रों वर्ष पूर्व हुए वह भी आर्य थे। चक्रवर्ती शासक थे सम्पूर्ण पृथ्वी पर उनका अधिकार था। रामायण महाभारत मनुस्मृति आदि ग्रन्थ हमारे प्रमाण हैं जिनमें प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम विस्तार से मिल जाऐंगे। उस समय विदेशों में विद्या शिक्षा कुछ नहीं थी यह विद्या शिक्षा भारत से ही विदेश में पहुँची। पुराणों के अनुसार शशविन्दु चक्रवर्ती सम्राट था उसका जामाता मान्धाता का शासन था पुराणों में वर्णन है। 'जहां से सूर्य उदय होता है और जहां वह अस्त होता है उसके मध्य का सम्पूर्ण प्रदेश मान्धाता का शासन क्षेत्र है'' मान्धाता की विजय यात्राओं के विषय में अश्वघोष कृत बुद्धचरित तथा बाण भट्ट के हर्षचरित में उल्लेख है। पाताल अर्थात् अमेरिका व गान्धार उसके अधीन होने का उल्लेख है ऐसा ही पृथ्वी की चक्रवर्ती शासक मरुत्त था जिसने अश्व मेघ यज्ञ किया था। गिलगित व बालितस्तान के शासक अपने नाम के साथ विक्रमाजीत व विक्रमादित्य के नाम को जोड़ते थे गिलगित व बाल्तिस्तान पर भारत के शासकों आर्यों का पूरा प्रभाव था अंग्रेज विद्वान सर स्टाइन ने चीन के खुलन आदि कई स्थानों पर खुदाई की वहां भारतीय मूल के राजकुमार के साम्राज्य मंदिर व ग्रन्थों के प्रभाव मिले है इस परिवार के आधा दर्जन परिवार के राजाओं के नाम के साथ विजय शब्द प्रयुक्त हुआ है यह स्थान बाद में सोवियत संघ में चले गए। दर्द देश के नए शासक शैव तुर्क थे। डतहाज की राजतरोगिणी में किशन गंगा के स्थान पर दर्द शासक का नाम आता है इनमें विद्याघर शाही भी था यहां आरहवी शताब्दी में हिन्दू तर्क शाही का शासन था। काबुल का शासक नरेन्द्र खिंगला था जिसने स्वात व गिलगित को अपने अधिकार में ले लिया था अफगानिस्तान में गदेग में मंदिरों का निर्माण कराया था। चिलास में महाराजा गगराज, वेश्रावन सेन सिंह मित्र आदि शासकों का उल्लेख मिलता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार प्राचीन काल में सम्पूर्ण पृथ्वी पर आर्यों का शासन था प्राचीन काल में महाराजा स्वायम्भुव मनु के वंशजों का पृथ्वी के अनेक भागों व दीपों पर शासन था। महाभारत युद्ध में चीन का राजा भगदत्त अमेरिका का वब्रवाहन कन्धार नरेश, यूरोप का राजा आज्ञानुसार पाण्डव न कौरवों के सेना में भाग लेने आए थे तथा महाराजा युधिष्ठिर की आज्ञानुसार हस्तिना पुर जाते थे।

आर्य संस्कृति भारत से पृथ्वी के अन्य भागों में फैली मान्धाता व स्याम्भुव मनु उनके वंशजों ने सम्पूर्ण पृथ्वी पर शासन किया धीरे लाखों वर्ष पश्चात वहां के भाषा व संस्कृति में परिवर्तन हुए राज्य छोटे होते गए आज वही विदेशी जो भारत की आज्ञा को मानते थे अपने को अलग मानने लगे अपने नएअलग मत बना लिए।

तात्पर्य यह है कि आर्य भारत में बाहर से आए कुछ स्वार्थी तत्वों की चाल थी, यदि बाहर से यहां आते तो वहां के नील यूफ्रेट्रस आदि नदियों स्थानों के नाम उनकी संस्कृति के साथ जुड़े होते अपितु विदेशों में भारतीय शासकों के नामों का उल्लेख मिलता है शिललेख मिलते हैं मूर्तियां व उनके बनाए स्थान आदि हैं पूरे तथ्य इसके मिलते हैं कि भारत से आर्य संस्कृति बाहर गई भारतीयों का विश्व भसर में शासन व आधिपत्य रहा था विषय अत्यन्त विस्तृत है देश विदेश की इतिहास पुस्तकों शिलालेख आदि में पुराणों आदि से इसका वर्णन मिलता है। आज की पाठ्य पुस्तकों में इस विषय को संशोधित कर लिखना व पढ़ाना चाहिए कि आर्य भारत के आदि काल से निवासी हैं आर्य संस्कृति यहाँ से पृथ्वी पर गई तथा अधिपतय रहा।

तात्पर्य यह है कि आर्य भारत में बाहर से आए कुछ स्वार्थी तत्वों की चाल थी, यदि बाहर से यहां आते तो वहां के नील यूफ्रेट्रस आदि नदियों स्थानों के नाम उनकी संस्कृति के साथ जुड़े होते अपितु विदेशों में भारतीय शासकों के नामों का उल्लेख मिलता है शिललेख मिलते हैं मूर्तियां व उनके बनाए स्थान आदि हैं पूरे तथ्य इसके मिलते हैं कि भारत से आर्य संस्कृति बाहर गई भारतीयों का विश्व भसर में शासन व आधिपत्य रहा था विषय अत्यन्त विस्तृत है देश विदेश की इतिहास पुस्तकों शिलालेख आदि में पुराणों आदि से इसका वर्णन मिलता है। आज की पाठ्य पुस्तकों में इस विषय को संशोधित कर लिखना व पढ़ाना चाहिए कि आर्य भारत के आदि काल से निवासी हैं आर्य संस्कृति यहाँ से पृथ्वी पर गई तथा अधिपतय रहा।

यह बड़े दुख: का विषय है कि इतना गौरवशाली भारत जहाँ विद्या सुशिक्षा सदैव से उन्नति शील रही नालंदा तक्षशिला आदि आज भी इसके प्रमाण हैं तथा विस्तार से देश विदेश की अनेक इतिहास पुस्तकों में देखे जा सकते हैं।

आर्य बाहर से आए यह विदेशी आक्रमणकारियों ने स्वार्थवश हमारे गौरव को मिटाने विकृत करने के उद्देश्य से प्रकाशित किया हमारी पाठ्य पुस्तकों में थोपा गया इतिहास को विकृत करने का प्रयास किया गया जो दुखद कुकृत्य है इतने महान व गौरवशाली देश के लिए स्वार्थ परता पूर्ण बात करना मूल है। भारत प्राचीन काल में गौरवशाली था उन्नति शील था यहां सभ्यता संस्कार संस्कृति उच्च कोटि के थे शिक्षा अति उत्तम थी समाज व मानव का जीवन व्यवस्थित था। राज्य की व्यवस्था उत्तम थी सत्य व न्याय का पालन होता था धर्मानुसार आचरण था सभी एक दूसरे का हित करते थे। वेद के अनुसार आचरण होता था वर्ण व्यवस्था जन्म से नहीं थी अपितु गुण कर्म स्वभाव पर थी आश्रम व्यवस्था का नियमानुसार पालन होता था जो मन में होता था वही वाणी में होता था कहीं पक्षपात न होता था, राणा प्रजा सब सत्यवादी होते थे प्राचीन काल के समस्त राजाओं के उदाहरण सत्य व न्याय पूरक मिलते है मर्यादा पूर्ण वर्षों से आदि सृष्टि के आर्य यहाँ के वासी हैं इसमें कोई सन्देह नहीं।

गली नं.2 चन्द्र लोक कालोनी खुर्जा
मो. 8979794715

thearyasamaj.org

अथर्ववेद में प्राणि-विज्ञान

● शिवनारायण उपाध्याय

प्राणिविज्ञान भी विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण शाखा है। इसमें प्राणियों की उत्पत्ति, विकास तथा उनके स्वभाव के विषय में अध्ययन किया जाता है। प्राणियों को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित कर उनका गहन अध्ययन किया जाता है। तीन भाग इस प्रकार हैं– स्वदेज, अंडज और जरायुज अथवा जलचर, स्थलचर और नभचर।

अथर्ववेद में तीनों प्रकार के प्राणियों के विषय में आवश्यक जानकारी दी गई है। इस लेख में हम उसी जानकारी का पाठकों से साक्षात्कार करा रहे हैं।

अल्गण्डून हन्मि महता वधेन दूना अदूना
अरसा अभूवन।
शिष्टानशिष्टान् नि तिरामि वाचा यथा
क्रिमीणांन किरूच्छिषातै। अथर्व. 2.31.3

पदार्थ– (अल्गण्डून) उपधानों (तकियों) में भरे हुए जन्तुओं को (महता) बड़ी (वधेन) चोट से (हन्मि) मैं मारता हूँ। (दूनाः) तपे हुए और (अदूनाः) बिना तपे हुए (पक्के और कच्चे कीड़े) (अरसाः) नीरस निर्बल (अभूवन) हो गए है (शिष्टान्) बचे हुए (अशिष्टान्) दुष्टों को (वाचा) वचन से (नि) नीचे डाल कर मार डालूँ (यथा) जिससे (क्रिमीणाम्) कीड़ों में से (न किः) कोई भी न (उच्छिषातै) बचा रहे।

भावार्थ– इस मंत्र में पसीने से पैदा होने वाली (स्वेदज) जूएँ और लीकों के विषय में बताया गया है। ये जन्तु मनुष्य के पसीने से पैदा होकर उसके वस्त्रों में आश्रय प्राप्त करते है और उसके सो जाने पर कपड़ों से निकलकर उसका रक्त चूसते हैं। सिरहाने के रूप में लगने वाले तकियों में भी ये अपना घर बना लेते हैं। इनको वस्त्रों में से एक–एक कर निकाल जमीन पर डाल कर नाखून से अथवा किसी भी साधन से मारा जाता है।

अगले मंत्र में इसी विषय को बढ़ाकर वर्णन किया गया है।

अन्वान्त्र्यं शीर्षण्यमथो पार्ष्टेयं क्रिमीन्।
अवस्कवं व्यध्वरं क्रिमीन् वचसा जम्भयामसि।।
अथर्व. 2.31.4

पदार्थ– (अन्वान्त्र्यं) आँतों में के (शीर्षण्यं) शिर पर अथवा शिर में के (अथो) और भी (पार्ष्टेयम्) पसलियों में के (क्रिमीन्) इन सब कीड़ों को (अवस्कवम्) नीचे–नीचे रेंगने वाले जैसे (दद्रु) और (व्यध्वरम्) छेद करने वाले वा पीड़ा देने वाले वा यज्ञ के विरोधी (क्रिमीन्) इन सब कीड़ों को (वचसा) बात मात्र से (जम्भयामसि) हम नाश कर दें।

ये क्रिमयः पर्वतेषु वनेष्वोषधीषु पशुष्वप्स्वन्त।
ये अस्माकं तनमा विविशुः सर्वं तद्धन्मि जनिम
क्रिमीणाम्।। अथर्व. 2.31.5

पदार्थ– (ये) जो (क्रिमयः) कीड़े (पर्वतेषु) पहाड़ों में (वनेषु) वनों में (ओषधीषु) अन्न आदि ओषधियों में (पशुषु) गौ आदि पशुओं में और (अप्सु) जल के (अन्तः) भीतर हैं और (ये) जो (अस्माकम्) हमारे (तन्वम्) शरीर में (आविविशुः) प्रविष्ट हो गए हैं। (क्रिमीणाम्) क्रिमियों के (तत्) इस (सर्वम्) सब (जनिम) जन्म को (हन्मि) मैं नाश करूँ।

अब हम अण्डज प्राणियों के विषय में बतलाते हैं। ये कई प्रकार के होते हैं जैसे मछली, मेंढक, सर्प, मगर तथा पक्षी आदि।

कैरात् पृश्न उपतृण्य बभ्र आ मे क्षृणुतासिता
अलीकाः।
मा मे सख्युः स्तामानम पिष्ठाताश्रावयन्तो नि
विषेर मध्वम्।। अथर्व. 5.13.5

पदार्थ– (कैरात) हे किरात अर्थात् शूकर आदि के फिरने के स्थान में रहने वाले। (पृश्ने) हे निपटने वाले। (उपतृण्य) हे बागड़ (घास स्थान) में दुबक जाने वाले। (बभ्रो) हे भूरे रंग वाले। (असिताः) हे काले वर्ण वाले। (अलीकाः) हे तुच्छ जीवो। तुम (मे) मेरी (आ) भली प्रकार (शृणुत) सुनो। (मे) मेरे (सख्युः) मित्र के (स्तामानम्) घर के (अपि) पास (मा, स्थात) मत ठहरो। (आश्रावयन्तः) अच्छे प्रकार सुनते हुए तुम (विषे) इस विषय में (नि रमध्वम्) चुपचाप ठहरे रहो।

भावार्थ– ये सरीसृप की ही विभिन्न जातियाँ हैं। इनको पनपने नहीं देना चाहिए। आगे और भी ऐसे प्राणियों के बारे में बतलाया गया है।

असितस्य तैमातस्य बभ्रोरपोदकस्य च।
सात्रासाहस्याहं मन्योरव ज्यामिव धन्वनो वि
मुञ्चामि रथाँ इव।। अथर्व. 5.13.6

पदार्थ– (असितस्य) काले कर्ण वाले (तैमातस्य) ओदे स्थान में रहने वाले (बभ्रो) भूरे वर्ण वाले (अपोदकस्य) जल से बाहर रहने वाले (च) और (सात्रासहस्य) मिलकर रहने वाली प्रजाओं को हराने वाले (सर्प) के (मन्योः) क्रोध के (रथान् इव) रथों को जैसे (घन्वनः) धनुष की (ज्याम् इव) डोरी के समान (अहम्) मैं (अव) अलग (वि मुञ्चामि) ढ़ीला करता रहूँ।

भावार्थ– इस मंत्र में जल में रहने वाले तथा जल व थल में रहने वाले सरीसृप जैसे प्राणियों का वर्णन हुआ है। मनुष्य को चाहिए कि सर्प रूप भयंकर दुष्ट स्वभावों को ढ़ीला कर दे जैसे चाप की डोरी को ढ़ीला करके रखते हैं।

आलिगी च विलिगी च पिता च माता च।
विद्म वः सर्वतो बन्ध्वरसाः किं करिष्य थ।।
अथर्व. 5.31.7

पदार्थ– (च) और (आलिगी) चारों ओर घूमने वाली (च) और (विलिगी) टेढ़ी–टेढ़ी चलने वाली (नागिन) (च) और (पिता) उसका पिता (सर्प) (च) और (माता) उसकी माता सर्पिणी तुम सब (वः) तुम्हारे (बन्धु) बन्धुपन को (सर्वतः) सब प्रकार से (विद्म) हम जानते हैं (अरसा) निर्वीर्य तुम (किम्) क्या (करिष्यथ) करोगे।

उरूगूलाया दुहिता जाता दास्यसिक्न्या।
प्रतङ्कं दद्रुषीणां सर्वा सामरसं विषम्।। अथर्व.
5.13.8

पदार्थ– (उरूगूलाया) बहुत डसने वाली (नागिन) की (दुहिता) पुत्री (असिक्न्या) उस काली (नागिन) से (जाता) उत्पन्न हुई (दासी) डसने वाली (नागिन) है। (सर्वासाम्) सब (दद्रुषीणाम्) खुजली देने वाली नागिन (प्रतङ्कम्) जीवन को नष्ट देने वाला (विषम्) विष (अरसम्) निर्बल है।

अगले मंत्र में भी पहाड़ के नीचे रहने वाली नागिन का वर्णन है।

परन्तु नाग अथवा नागिन हमें लाभ भी पहुँचाते हैं। ये फसलों को जड़ से नष्ट कर देने वाले चूहों को अपना भोजन बनाकर फसल की रक्षा भी करते हैं।

ताबुवं न ताबुवं न धेत् त्वमसि ताबुवम्।
ताबुवेनारसं विषम्।। अथर्व. 5.13.10

पदार्थ– (ताबुवम्) वृद्धि करने वाली वस्तु (ताबुवम्) पीड़ा देने वाली वस्तु (न) नहीं होती। (त्वम्) तू (सर्प) (ध इत्) अवश्य ही (ताबुवम्) दुःख नाशक वस्तु (न) नहीं (असि) है। (ताबुवेन) हमारी वृद्धि करने वाले कर्म से (विषम्) तेरा विष (अरसम्) निर्बल हो जावे। हमने जलचर व स्थल चर प्राणियों के विषय में जान लिया है अब हम नभचर पक्षियों के विषय में जानने का प्रयास कर रहे हैं।

सुपर्णस्त्वान्वविन्दत् सुकरस्त्वाखनन्नसा।
दिप्सौषधे त्वं दिप्सन्तमव कृत्याकृतं जहि।।
अथर्व. 5.14.1

पदार्थ– (सुवर्ण) सुन्दर पंख वाले अथवा शीघ्रगामी (गरूड़, गिद्ध आदि पक्षी) ने (त्वा) तुझको (अनु) दृढ़ कर (अविन्दत्) पाया है। (सूकरः) सूकर ने (त्वा) तुझको (नसा) नासिका से (अखनत्) खोदा है। (ओषधे) हे ताप नाशक पुरूष (त्वम्) तू (दिप्सन्तम्) मारने की इच्छा करने वाले को (दिप्स) मारने की इच्छा कर और (कृत्याकृतम्) हिंसाकारी पुरूष को (अवजहि) मार डाल।

भावार्थ– गिद्ध, मोर आदि पक्षी बड़े तीव्र दृष्टि होते हैं। सूअर एक बलवान तीव्र बुद्धि पशु अपनी नासिका से खाद्य तृण को भूमि से खोद कर खा जाता है। इसी प्रकार दूरदर्शी मनुष्य अपने शत्रुओं को खोज कर नाश करता है।

भावार्थ– गिद्ध, मोर आदि पक्षी बड़े तीव्र दृष्टि होते हैं। सूअर एक बलवान तीव्र बुद्धि पशु अपनी नासिका से खाद्य तृण को भूमि से खोद कर खा जाता है। इसी प्रकार दूरदर्शी मनुष्य अपने शत्रुओं को खोज कर नाश करता है।

अब हम जरायुज थलचर प्राणियों के विषय में चर्चा कर रहे हैं।

थलचर चरायुज प्राणियों में पालतू पशु गाय को आदर्श मानकर उसके विषय में जो कुछ लिखा गया है वह सामान्य रूप से दूसरे पालतू पशुओं पर भी लागू हो जाता है।

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभूत्या।
अहर्जातस्य यन्नाम तैना वः सं सृजामसि।।
अथर्व. 3.14.1

पदार्थ– हे गौओ। (वः) तुमको (सुषदा) सुख से बैठने योग्य (गोष्ठेन) गोशाला से (सम्) मिलाकर (रय्या) धन से (सम्) मिलाकर और (सुभूत्या) बहुत सम्पत्ति से (सम्) मिलाकर और (अहर्जातस्य) प्रतिदिन उत्पन्न होने वाले प्राणी का (यत् नाम) जो नाम है, (तेन) उस नाम को (सम् सृजामसि) हम मिलाकर रखते हैं।

भावार्थ– मनुष्य गौओं को स्वच्छ नीरोग गोशाला में रखकर पालें और उनको अपने धन और सम्पत्ति का कारण जानकर अन्य प्राणियों के समान उनके नाम बहुला, कामधेनु, नन्दिनी आदि रखें।

इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत।
इहैवोत् प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः।।
अथर्व. 3.14.4

पदार्थ– (गावः) हे गौओ। (इह एव) यहाँ भी (एतन) आओ। (इह उ) यहाँ ही (शका इव) गृह पत्नी के समान (पुष्यत) पोषण करो। (उत) और (इह, एव) यहाँ पर ही (प्रजायध्वम्) बच्चों से अपनी संतानों से बढ़ो।

(मयि) मुझमें (वः) तुम्हारा (संज्ञानम्) प्रेम (अस्तु) होवे।

मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह
पोषयिष्णुः।
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरूप वः
सदेम।। अथर्व. 3.14.6

पदार्थ– (गावः) हे गौओ। (मया गोपतिना) मुझ गोपति से (सचध्वम्) मिली रहो। (इह) यहाँ (अयम्) यह (पोषयिष्णुः) पोषण करने वाली (वः) तुम्हारी (गोष्ठः) गोशाला है। (रायः) धन की (योपोण) पुष्टि से (बहुलाः) बहुत पदार्थ देने वाली अथवा वृद्धि करने वाली (भवन्तीः) होती हुए और (जीवन्तीः) जीती हुई (वः) तुमको (जीवाः) जीते हुए हम लोग (उप) आदर से (सदेम) प्राप्त करते रहें।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अथर्ववेद में प्राणियों के विषय में पर्याप्त वर्णन है। इति शुभम्।

73, शास्त्री नगर दादाबाड़ी
कोटा (राजस्थान) 324009

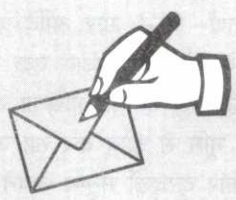

पत्र/कविता

वेद की आज्ञा है 'मनुर्भव' माँस भक्षी नहीं

मानव देह कब्रिस्तान नहीं, ईश्वर की श्रेष्ठकृति है। इसे मूक पशुओं के वध व माँस भक्षण में न लगाकर परोपकार में लगाइये। वेद की आज्ञा 'मर्नुभवः' का बच्चों को शिक्षा ग्रहण के दौरान ही पालन करना चाहिए।

विभिन्न शोधों से यह बात स्पष्ट हुई है कि माँसाहार से ब्लडप्रैसर, एन्जीमा कैन्सर, हार्टप्राब्लम्, डिप्रैशन जैसी खतरनाक बीमारियों की सम्भावना बढ़ जाती है जबकि शाकाहार स्वास्थवर्धक ही नहीं विभिन्न बीमारियों को रोकने में भी सक्षम है।

'सर्वेभवन्तु सुखिनः' का संदेश देने वाली विश्व की प्रथम सभ्य व शिक्षित आर्यो की सन्तानें आज पश्चिम की नकल में माँसाहार अपना रही हैं और वहाँ के लोग धीरे–धीरे शाकाहार का महत्व समझ रहे हैं। भूक पशुओं पर दया करें क्योंकि उन्हें भी अपना जीवन प्यारा है।

तारा सिंह
हरिनगर, मेरठ सिटी
मो.: 09719110801, 8439552082

****

वैदिक प्रवक्ताओं से विनती

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' या 'मनुर्भव' की प्रचार श्रृखला में अविद्या अज्ञानता के घोर अन्धकार को दूर करने के लिए खानपान को सुधारना अनिवार्य है। आज भौतिकवाद की चकाचौंध में मानवता का सत्यमार्ग अदृश्य (ढकता) होता जा रहा है, क्योंकि मनुष्य का खाना–पीना दूषित हो गया है। आप देख रह हैं कि मीट, मछली, अण्डों का बाजार गर्म है। सरेआम मार्केट में चिकन, तन्दूरी मुर्गे और कटे हुए बकरों की दुकानें खुली हुई हैं। देशी और अंग्रेजी शराब के ठेके खुले हुए हैं इस कारण सदाचार समाप्त होता जा रहा है। आश्चर्य और दुःख की बात है कि इन गन्दी हानिकारक चीजों का प्रयोग आर्य समाजी परिवारों में भी हो रहा है।

आर्य जगत् के उपदेशकों और वैदिक प्रवक्ताओं से विनती है कि जहां भी जाएं निर्भय और निर्लोभ होकर मांस और शराब के विरुद्ध जोरदार शब्दों में निन्दा करें। इनके सेवन से उत्पन्न होने वाले रोगों और दुष्परिणामों को बताते हुए तत्काल छोड़ने की प्रेरणा दें। शाकाहारी भोजन के लिए प्रेरित करें।

आज वातावरण दूषित होता जा रहा है। मानसिकता प्रदूषण को दूर करने के लिए खानपान का सुधारने की प्रथम आवश्यकता है। मैं तो कहता हूं कि युद्धस्तर पर इस महामारी को रोकने का प्रचार होना चाहिए। मुझे क्या , तुझे क्या, यदि यह सुनकर चुप रहोगे तो याद रखो! इस विनाशकारी तूफान के संकट से आप भी नहीं बच सकते। यदि बचना चाहते हो तो इन बुराइयों को दूर करने के लिए संगठित होकर हर संभव प्रयास करना आरम्भ कर दो। यज्ञ की तरह यह भी एक श्रेष्ठ कार्य है जिसे करने में कोई शंका, भय और लज्जा नहीं होनी चाहिए। नेक काम को साहस और उत्साह से करते रहो। यदि जनता का खानपान सुधर गया तो विचार सुधर जाऐंगें और विचार सुधर गए तो व्यवहार सुधर जाएगा, फिर सदाचार बन जाएगा।

आपसे एक और निवेदन है कि वक्ता को समय सीमा की मर्यादा का पालन करना चाहिए। आपको बोलने के पांच मिनट दिए हैं तो छठा मिनट लेकर अतिक्रमण मत करो, अन्यथा अनुशासन भंग होगा और लोकप्रियता फीकी पड़ जाएगी। विद्वत्ता अधिक बोलने में नहीं अपितु कम बोलने में हैं। किसी आर्य समाज में कोई उत्सव हो रहा था। विज्ञापन में लिखे अनुसार एक बजे ऋषि लंगर था। मंच संचालक ने एक बजे एक स्वामी जी को पांच मिनट बोलने के लिए कहा, उस संन्यासी ने यह कहकर कमाल कर दिया कि कार्यक्रम का समय समाप्त है। कृप्या शान्तिपाठ करो। वैसा ही हुआ। प्रायः देखते हैं कि मंच वक्ताओं की भीड़ जमा कर लेते हैं और कार्यक्रम को कभी निश्चित समय पर खत्म नहीं करते जो अनुशासनहीनता का प्रतीक हैं।

श्री देवराज आर्यमित्र
हरिनगर, नई दिल्ली –64

****

दीपमालिके! ज्योतिचरण धर उतरो

दीपमालिके! ज्योति चरण धर
उतरो भूपर, अन्तरिक्ष, स्वर्तक्षत्र लोक पर
चम-चम चमको अट्टसास कर
आधि-व्याधि मानव-मन की
हरो, जला दो भेदभाव को!
मत -पंथों सम्प्रदाय के गर्हित और अनर्थक
कूड़ा करकट तृण शूल जाल को!
धर्म और राजनीति! कितने उज्जवल धवलनाम
अस्पृश्य जहाँ मत-मजहब, फ्रण्ट, पाखण्ड मिथ्या कर्मकाण्ड
कितने हिंसक ताण्डव! धर्म और राजनीति-नाम पर!!

भूख प्यास से पीड़ित, पंजर में
बंदी पंछी प्राणी, पाप-पंक में लथपथ
व्यभिचार, बलात्कार पापाचार-ग्रस्त
क्षत-विक्षत मानवता काया।
भूखे, नंगे, गिरिजन, हरिजन, अफ्रीकी मजदूर
बहुजन समर्थ के आतंकी व्याघ्र-नखों से!
दीपधारिणि! तमसहारिणि! सब जन का सुख
ध्येय तुम्हारा! पंथ सुझाओ अंधों पथभ्रष्टों को।
जगमग ज्योतिर्दीपों नक्षत्रों के चाक चिक्य से
चीरो दंष्ट्रा करपत्रों से दैत्य-दनुज-दल!
जिससे छोड़े बहकाना सर्वधर्म समभाव मर्शक नारा!
दूषित स्वार्थी का दूषित विषधर नाग-पिटारा।।

मनुज एक तो धर्म एक है
बाकी सब पाखण्ड जगत् के
कीट पतंगों, मिथ्या अथवा अर्द्धसत्य
की मदिरा पी चिल्लाते धर्मध्वजी!
ढोंगी व्यक्ति अहंकार के पोषक!!
दीपावलि! तेरा राम कहाँ है?
रामराज्य लाना है तुझको! एक तपोवन
लोकतंत्र हो जिसमें हो अग्रज मनुसुत
समदर्शी प्राणिमात्र पर अहिंसक
दुग्ध-फल अन्नाहारी!
इन्द्रियजित् इकनारी ब्रह्मचारी संन्यासी
मांस-मत्स्य अण्डों का भक्षण हो निषिद्ध
मन से विधि-नियमों से रामराज्य विश्वराज्य!
प्राणि-प्रकृति पर्यावरण-पोषण-पूर्ण राज्य।।

व्यक्ति नाम के अहंकार से अचल मत
मजहब के आडम्बर ढहें, जले जग जननी
के रोग-शोक पीड़ा के खल-जंगल।।
निखरे धरती का रूप रंग बिचरे संग संग
जल, पवन, अनल भू अम्बर में
प्रभु के सेवक सूर्य चंद्र हों फिर नव आभा मंडित
छत्र चँवर के नीचे हों अभिषिक्त राम-लखन-सीता।।
पश्चिम की राजनीति या अर्थनीति?
या म्लेच्छों की अपशिक्षा अपसंस्कृति
पूंजी श्रम आधारित पूंजी साम्यवाद-आतंकवाद
लम्पटता शिश्नवाद सब पर होली बन टूटो।
इनके प्रति क्या सद्भाव समानता
जिनकी पूँछ सदा ही टेढ़ी।।
दीपावलि तुम दो यह प्रकाश
प्रखरता दाहकतामय हो संदेश तुम्हारा।
इस धरती के पूत राम के दूत
सभी जन पीलें अमृतधारा।।

डॉ. मदन मोहन जावलिया–252
चम्पानगर गुर्जर की थड़ी
न्यू सांगलिर रोड–जयपुर (राज.)
फोन. – 0141–22990391

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 06 का शेष

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी...

मुख्य समस्याएँ थी – एक तो कॉलिज के लिए धन की, दूसरे कॉलिज में पाठ्यक्रम की।

जहाँ तक धन–संग्रह का प्रश्न था, लोगों ने तन मन से धन की सहायता की। देवियाँ तो स्वयमेव संकेत होते ही आभूषण तक न्योछावर कर रही थीं। श्री हंसराज जी ने तो एक कदम आगे बढ़ाकर घोषणा कर दी थी कि दयानन्द स्कूल खुलने पर मैं उसका आजीवन अवैतनिक हैडमास्टर बनने के लिए तैयार हूँ। फिर क्या था 1 जून 1886 को डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना कर दी। पहले सप्ताह में ही स्कूल में बालकों की संख्या तीन सौ का आंकड़ा पार कर गई।

चारों ओर स्कूल के अनुशासन तथा पढ़ाई की चर्चा फैल गई। स्कूल की दसवीं कक्षा का पहला परीक्षा फल 1888 में प्रान्त भर में सर्वोत्तम रहा। इससे तो डी.ए.वी. के नाम का डंका बज गया। इस उत्साहजनक समाचार से जनता ने स्कूल को कॉलिज बनाने की मांग की। दयानन्द स्कूल के पाठ्यक्रम की एक यह भी विशेषता थी, कि यहाँ हिन्दी तथा संस्कृत का विशेष प्रावधान भी था। जब कि अन्य शिक्षण संस्थाओं में यह सुविधा न के बराबर थी। इस विषय में श्री गुरुदत्त विद्यार्थी का महत्वपूर्ण योगदान था।

कॉलिज विभाग की प्रथम वर्षीय कक्षा 1889 में चालू कर दी गई। इनमें श्री गुरुदत्त गणित तथा विज्ञान, सन् 1883–1884 श्री गुरुदत्त जी के लिए अत्यन्त व्यस्तता के थे। कॉलिज में गणित तथा विज्ञान पढ़ाने की जिम्मेदारी, अनेक स्थानों पर आर्य समाजों के उत्सवों का कार्यक्रम। उधर बी.ए. की परीक्षा सिर पर। पढ़ने की फुर्सत ही कहां थी? फिर भी पंजाब विश्व विद्यालय में 1885 में बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। श्री हंसराज द्वितीय रहे। अब हंसराज जी तो आगे पढ़ाई छोड़कर कॉलिज की सेवा में ही जुट गये। श्री गुरुदत्त ने आर्य समाज तथा कॉलिज की सेवा करने के साथ ही एम.ए. में प्रवेश ले लिया।

इधर गुरुदत्त जी की माँग आर्य समाज के उत्सवों के लिए बहुत बढ़ गई। समय कम और कार्य अधिक, पर विद्यार्थी जी सारे कार्यक्रम निभाते रहे। ग्रीष्मवाकाश मे अमृतसर रावल पिण्डी तथा पंजाब में, दूसरे नगरों के उत्सवों में जाने के अतिरिक्त यू.पी. में भी जाना पड़ता था। आर्य जनता भी कॉलिज के लिए खुले हाथों धन की वर्षा करती थी। कॉलिज के साथ दयानन्द का नाम जो लगा था। गुरुदत्त जी के पास अब 24 घन्टों में से अपने लिये तो एक घंटा भी नहीं था। सोने के लिए भी मुश्किल से चार–पाँच घंटे ही मिल पाते थे। कभी–कभी तो इनमें से भी कम। परिणाम वही हुआ, जो होना था।

कभी सिर दर्द, कभी पेट दर्द, कभी आँखों को पीड़ा। 28 जनवरी 1889 को निजी डायरी में लिखा:– 'अतिसार रोग से ग्रस्त हूँ। इस रोग ने लगभग सारा वर्ष पीछा नहीं छोड़ा।' फरवरी में जिगर में दर्द हो गया। अगस्त में (रपटने से) बायीं भुजा टूट गई।

इस समय जीवन–निर्वाह की समस्या भी आड़े आ रही थी। एकेडेमिक रिकार्ड के आधार पर कहीं भी अच्छी नौकरी मिल सकती थी। परन्तु आपको तो अध्यापन के अतिरिक्त कोई क्षेत्र पसंद नहीं था। तब लाहौर के राजकीय कॉलिज में विज्ञान के सहायक प्रौफेसर के पद पर नियुक्ति हो गए। उधर पिता लाला रामकृष्ण जी बीमार हो गए। अतः लाहौर से मुल्तान जाना पड़ा। ग्रीष्मावकाश में डेपुटेशन के साथ धन संग्रह के लिए जाना था। बड़ा धर्म संकट था। इस बार शिष्ट मंडल को दिल्ली, अलीगढ़, कानपुर, बरेली, मुरादाबाद, बनारस, इलाहबाद, लखनऊ आदि नगरों में जाना पड़ा। सभी स्थानों में प्रवचन भी देना पड़ता था। इसी बीच रावलपिण्डी उत्सव पर जाना पड़ा। वहाँ से लाहौर आये तो पिताजी के निधन का तार मिला। ये तत्काल मुल्तान के लिये चल दिये। घर तार द्वारा सूचना दे दी कि मेरे आने तक दाह संस्कार न किया जाय। वहाँ पौराणिक पंडित पुरानी रीति से दाह–संस्कार करना चाहते थे। गुरुदत्त जी के पहुँचने पर ही उनका दाह–संस्कार वैदिक रीति से किया गया। अपने पिताजी का अंतिम संस्कार कर गुरुदत्त जी वापिस लाहौर लौट आये, और पुनः आर्य समाजों के उत्सवों पर जाना शुरू कर दिया। नवम्बर 1887 को लाहौर समाज के उत्सव में आपके कई भाषण हुए। अंतिम भाषण में कॉलिज के लिए अपील करते हुए बड़े ही मार्मिक शब्दों में विद्यार्थी जी ने कहा:– 'यह कॉलिज ऋषि दयानन्द के शरीर का स्मारक नहीं अपितु उनके विचारों तथा त्रिकाल सत्य की स्मृति है।' ज्यों ही भाषण समाप्त हुआ धन की वर्षा शुरू हो गई। उसी समय पाँच हजार रूपये एकत्रित हो गये। देवियों ने अपने आभूषण भी उतार कर दान में दे दिये। अस्वस्थ होते हुए भी गुरुदत्त जी लाहौर से मेरठ, वहाँ से अजमेर फिर जयपुर और तत्पश्चात् जनवरी 1888 में अमृतसर आर्य समाज के वर्षिकोत्सव पर पहुँचे।

एक महत्वपूर्ण कार्यः– इस वर्ष पं. गुरुदत्त जी ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया। असल में कुछ पश्चिमी विद्वानों ने वेदों तथा अन्य भारतीय ग्रन्थों के उल्टे सीधे, बेतुके अर्थ कर प्रकाशित कराए। जिन्हें पढ़कर भारतीय शिक्षित समाज अपने ही धर्म एवं संस्कृति का मजाक उड़ा रहा था। इसाई मिशनरी ऐसे ग्रन्थों का खूब प्रचार, प्रसार कर रहे थे। ब्रिटिश सरकार भी उन्हें खुलकर सहयोग तथा सहायता दे रही थी। कोई माई का लाल विरोध करने वाला न था। ऐसे आपत्कालीन समय में इस कार्य को पं. गुरुदत्त ने अपने हाथों में लिया।

उन दिनों आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में संस्कृत विभाग के प्रोफेसर विलियम्स ने मई 1975 में 'इण्डियन विज़डम' नामक ग्रन्थ की रचना की। विलियम्स ने इस पुस्तक की विस्तृत भूमिका में बहुत कुछ अनर्गल बातें भारतीय धर्मों के बारे में कहीः– 'इन पृष्ठों का एक उद्देश्य यह भी है, कि ईसाई धर्म और भारत में प्रचलित संसार के तीन बड़े–बड़े झूठे धर्मों के बीच भेद प्रकट किया जाय।'

यह विचारणीय तथ्य है, कि जो ग्रन्थकार किसी धर्म को पहले ही झूठा मानकर कलम उठाता है, क्या वह उसके विषय में निष्पक्ष राय दे सकेगा? अस्लियत यह थी कि ब्रिटेन निवासी मि. बोडन ने ऑक्स फोर्ड यूनिवर्सिटी को भारी धन राशि इसी उद्देश्य से दी थी, कि वह संस्कृत साहित्य का अनर्गल, भद्दा तथा अरुचिकर अनुवाद कर, बाइबिल को संस्कृत में अनुवादित करा कर, भारतीयों में ईसाइयत का प्रचार करा सके। केवल मोनियर विलियम्स ने ही अपितु कीथ तथा मैकडॉनल आदि ने यही कार्य किया।

पण्डित गुरुदत्त ने उन पुस्तकों की अपने व्याख्यानों तथा लेखों में भी जमकर आलोचना की और विलियम्स को मुँह तोड़ कर उत्तर दिया। उन्होंने अपने तर्कों से यह सिद्ध किया कि उन लोगों ने संस्कृत साहित्य का मूल रूप से मन्थन नहीं किया, अपितु केवल अनुवादों के आधार पर पक्षपात पूर्ण ढंग से अपनी पूर्व मान्यताओं को सिद्ध करने के लिए ही इन ग्रन्थों की रचना की है।

वेदों के प्रति पं. गुरुदत्त जी की अटूट श्रद्धा थी। उनका दृढ़ विचार कि 'आधुनिक विज्ञान के चाहे कुछ भी गुण हों, उन्होंने पाश्चात्य विज्ञान की अपेक्षा प्राचीन वैदिक विज्ञान की श्रेष्ठता सिद्ध की। अपने पक्ष की पुष्टि में लाखों वर्ष पूर्व लिखे 'सूर्य सिद्धान्त' नामक ग्रन्थ से अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये, तथा दर्शाया कि सृष्टि आयु के विषय में वैदिक पक्ष वर्तमान वैज्ञानिक मान्यता से उत्तम तथा अधिक विश्वसनीय है। इस सारी खोज का आधार सर्वज्ञानमयी वेद वाणी है। यह विशेषता केवल वेद की है। इसके विपरीत बाइबिल की विशेषता है, परस्पर विरोधी तथा विज्ञान के प्रतिकूल मान्यताएँ।

पंडित गुरुदत्त जी को आर्य समाज के उत्थान तथा कल्याण की अत्यधिक चिन्ता रहती थी। वे सदा सही सोचते थे कि जो विद्वान तथा शास्त्रज्ञ मिलें वे चाहे किसी भी गुट या सम्प्रदाय के हों उन्हें आर्य समाज में प्रविष्ट कर आर्यत्व की भावना को प्रसारित किया जाए।

इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत उन्होंने चार विद्वान नवीन वेदान्ती संन्यासियों को आर्य धर्मावलम्बी बनाया। ये थे संस्कृत के ज्ञाता तथा दर्शन शास्त्र में पारंगत स्वामी महानन्द। स्वामी स्वात्मानन्द जी, इन्होंने स्वयं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपनिदेशक के रूप में अपनी सेवाएँ अर्पित कर दीं। तीसरे थे स्वामी प्रकाशानन्द जी। इन्होंने भी गुरुदत्त जी के वैदिक धर्म सबंधी विचारों से प्रभावित हो वैदिक धर्म को ग्रहण किया और चौथे ये स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज, ये नवीन वेदान्त के सुलझे हुए मान्य विद्वान् थे। उपनिषदों के ये उत्कृष्ट ज्ञाता गददीधारी महन्त थे और इनकी साधुओं के रूप में एक विशाल मण्डली थी।

पंजाब में इनकी विद्वता तथा पाण्डित्य की बहुत धाक थी। इनके उपदेशों को हजारों व्यक्ति सुनने के लिए ललायित रहते थे। पण्डित गुरुदत्त की इन पर निरन्तर दृष्टि लगी रहती थी, और वे सोचते थे कि काश! स्वामी अच्युतानन्द आर्य समाज में आ जायँ तो कितना अच्छा हो, पर सैकड़ों साधुओं की शिष्य मण्डली, समस्त सुख सुविधाओं से पूर्ण आनन्द प्रद 'महन्त गद्दी'। भला एक मठाधीश, इन साधनों और मठ, में ठोकर मारकर क्या भिक्षा पात्र हाथ में लेकर गुरुदत्त के साथ आर्य समाज में मारा मारा फिरेगा? पर वही मठाधीश एक दिन इन सारी सुख सुविधाओं में ठोकर मारकर आर्य समाज की वेदी पर बैठकर वैदिक धर्म की दुन्दु भी बजाता देखा गया, तो लोगों ने दाँतों तले उँगली दबा ली। आखिर यह सब हुआ कैसे? यह एक अलग गाथा है।

24/4 बिशन स्वरूप कॉलोनी
पानीपत–132103
मो0 : 08053123781
दूरभाषः 0180/2643700

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 22-23/10/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

स्वच्छ भारत-स्वच्छ विद्यालय अभियान

स्वच्छ भारत के सपनों को साकार करने हेतु आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी द्वारा 25 सितम्बर 2014 को आरंभ किए गए स्वच्छता अभियान को विस्तार देते हुए डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बेगसराय ने ठोस कदम उठाया और अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस अभियान में श्रमदान, भाषण, प्रश्नोत्तरी, कविता-वाचन, कहानी-वाचन, तथा स्लोगन-लेखन प्रतियोगिताएँ कराई गईं।

एक विशेष प्रार्थना सभा आयोजित की गई, जिसमें विद्यालय प्राचार्य श्री मुकेश कुमार, एवं जीरोमाईल इंस्पेक्टर श्री अमरनाथ सिंह ने बच्चों को स्वच्छता का महत्व बताते हुए समस्त विद्यालय परिवार के साथ स्वच्छता की शपथ ली तथा विद्यालय परिसर, सिमरिया घाट, एवं जीरोमाईल दिनकर गोलंबर पर सड़क पर कूड़े-कचड़े को साफ कर स्वच्छता अभियान संचालित किया। अभियान की अंतिम कड़ी में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए प्राचार्य श्री मुकेश कुमार ने लोगों से आह्वान किया कि अपने आस-पास के परिवेश को स्वच्छ एवं साफ-सुथरा रखें। स्वच्छता जीवन के लिए बेहद जरुरी है।

स्वच्छता अभियान में सम्मिलित शिक्षिका श्रीमती अर्जना मिश्रा, विधि झा,

नम्रता सिन्हा शिक्षक नरेन्द्र कुमार, आर. एस. सिंह, संजीव कुमार, सुनील कुमार, बी.एन.सरण, अमितेश कु. पाठक, मुचकुंद कुमार छात्र अभिषेक कुमार, केशव कुमार, राहित, विक्रम, अमन, अंकित रंजन, गौतम, अनुभव समेत सैकड़ों छात्र इस अभियान को सफल बनाने हेतु सक्रिय थे।

यज्ञ से हुआ महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय के नए सत्र का आरम्भ

डी.ए.वी. महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय बेरी गेट, अमृतसर के नए सत्र का आरम्भ स्थानीय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री जे.के. लूथरा जी की अध्यक्षता में पवित्र हवन द्वारा सम्पन्न हुआ जिसमें श्री बालकृष्ण मित्तल सचिव डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ सभा, नई देहली, मुख्य अतिथि और यजमान के तौर पर सपत्नीक पधारे और कॉलेज के प्रांगण में वृक्षारोपण भी किया। कार्यकारी प्राचार्य श्रीमति वनिता गर्ग ने मुख्य अतिथि समेत सभी आए हुए अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया एवं कॉलेज की गतिविधियों और उपलब्धियों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि श्री बालकृष्ण मित्तल जी ने अपने ओजस्वी प्रवचन द्वारा श्री लूथरा जी के सुयोग्य नेतृत्व में चल रहे कॉलेज के कार्यक्रमों की भरपूर श्लाघा की एवं विद्यार्थियों को पूरी लगन और मेहनत से शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा दी। उन्हें अपना भविष्य उज्ज्वल करने के साथ-साथ देश के निर्माण में भी अपना सहयोग प्रदान करने को कहा। उन्होंने कॉलेज की सहायतार्थ 50000/- रुपये अनुदान की भी घोषणा की। अपने धन्यवाद प्रस्ताव में अध्यक्ष श्री जे.के. लूथरा जी ने सभी आए हुए अतिथियों का साधुवाद धन्यवाद किया एवं विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर स्थानीय समिति के सदस्य प्रिंसीपल के.ऐन.कौल, श्री इन्द्रपाल आर्य, श्री रजिन्द्र गोयल, श्री अरुण खन्ना, विंग कमांडर एस.एल.चावला, श्री तिलकराज महाजन, श्री राम आसरा भारद्वाज के अतिरिक्त अमृतसर की विभिन्न आर्य समाजों के गणमान्य सदस्य/अधिकारी एवं प्रिंसिपल बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम बहुत ही रोचक और शोभायमान था।

तपोवन विद्या निकेतन का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून का 5 दिवसीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न हो गया। प्रथम दिवस पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी की आचार्या सुश्री प्रियंका शास्त्री ने जीवन निर्माण की चर्चा के प्रसंग में वेदों के शब्दों ''मनुर्भव'' का उल्लेख कर कहा कि हमें वेदों में कहे गये गुणों को धारण करके मनुष्य बनना है।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल ने अनेक भजनों व उपदेश से श्रद्धालुओं को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि जिस मनुष्य को सुख की इच्छा है, उसे यज्ञ, अग्निहोत्र या हवन नित्यप्रति करना चाहिये।

आयोजन में पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी से पधारी ब्रह्मचारियों ने एक समवेत प्रभावशाली गीत प्रस्तुत किया जिसके बोल थे- ज्ञान का सागर चार वेद, यह वाणी है भगवान की, 'इससे मिलती सब सामग्री जीवन के कलयाण की।'' इस भजन को श्रोताओं ने अत्यन्त पसन्द किया।

''ओ३म्'' ध्वज का आरोहण किया गया और सभी ने मिलकर वेद राष्ट्रगान का उच्चारण मुख्य अतिथि एवं आश्रम के अधिकारीगणों मुख्यतः प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, महामंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा ने कक्षाओं में प्रथम,द्वितीय व तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। विद्यालय के शैक्षिक एवं अन्य कर्मचारियों तथा सहयोगियों की सेवाओं की सराहना के साथ उन्हें भी स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। आयोजन के मुख्य अतिथि श्री चन्द्र गुप्त विक्रम ने उद्‌बोधन में बच्चों को सुन्दर व प्रभावशाली प्रस्तुतियां देने के लिए प्रेरित किया और उनके शिक्षकों और प्रशिक्षकों को साधुवाद दिया। उन्होंने बाल्मीकि जयन्ती, पूर्णिमा, चन्द्र ग्रहण एवं सेवा दिवस के साथ अनेक विषयों की चर्चा कर आश्रम एवं विद्यालय प्रशासन का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के समूह गान के साथ आयोजन सम्पन्न हुआ।

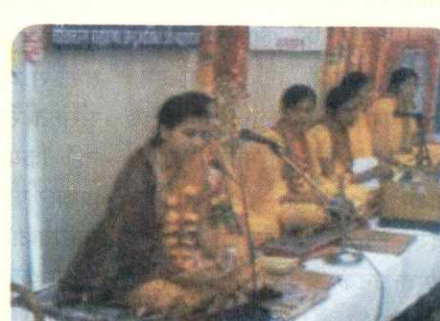

मुद्रक व प्रकाशक – **एस.के.शर्मा,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**